विशद
लघु जिनसहस्रनाम विधान

रचयिता
प.पू. साहित्य रत्नाकर
आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज

कृति : **विशद लघु जिनसहस्रनाम विधान**

कृतिकार : **प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज**

संस्करण : **प्रथम-2023**

प्रतियाँ : **1000**

संकलन : **मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज**

सहयोगी : **आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी**
क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी

संपादन : **ब्र. ज्योति दीदी 9829076085**
ब्र. आस्था दीदी 9660996425
ब्र. सपना दीदी 9829127533
ब्र. आरती दीदी, 8700876822
ब्र. प्रदीप, 7568840873

प्राप्ति स्थल : **1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, 9413336017**
2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, 09416888879
3. महेन्द्र जैन रोहिणी से.-3, दिल्ली
www.vishadsagar.com.app-vishadsagarji

मूल्य : **25/- रु. मात्र**

:: पुण्यार्जक ::

.....

मुद्रक : **पारस प्रकाशन, दिल्ली**
मो. 9811374961, 9811363613
kavijain1982@gmail.com

लघु सहस्रनाम व्रत विधि

महाराष्ट्र, राजस्थान आदि प्रांतों में व साधु संघों में सहस्रनाम व्रत में ग्यारह उपवास करने की भी परंपरा है। इसमें भी उपवास के दिन सहस्रनाम पूजा करके 1008 मंत्रों को पढ़कर समुच्चय जाप्य करना चाहिए। सहस्रनाम स्तोत्र पढ़कर एक-एक अध्याय के अंत में अर्घ्य चढ़ाने की भी परंपरा है। इस प्रकार विधिवत् पूजन करके समुच्चय जाप्य ऊपर दी गई है।

ग्यारह व्रतों में नीचे लिखी अलग-अलग जाप्य भी कर सकते हैं-

1. ॐ ह्री श्रीमदादि शतानाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं दिव्यभाषा पत्यादिशतनाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं स्थविष्ठादिशतनाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं महाशोकध्वजदिशतनाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री वृक्षलक्षणादिशतनाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं महामुन्यादिशतनाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं असंस्कृतादिशतनाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं वृहद्वृहस्पत्यादिशतनाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं त्रिकलदर्श्यादिशतनाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं दिग्वासादि अष्टोत्तरशतनाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्रीमदादि-अष्टोत्तरसहस्रनाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।

इस व्रत को भी पूर्ण करके "सहस्रनाम मंडल विधान" करके यथाशक्ति उद्यापन करना चाहिए।

इस सहस्रनाम व्रत के प्रभाव से भव्य जीव नाना सुखों को भोगकर अंत में एक हजार आठ लक्षण व नाम के धारक ऐसे जिनेंद्रदेव के पद को प्राप्त करने में समर्थ हो सकते हैं। जो इस व्रत को नहीं कर सकते वे भी यदि सहस्रनाम मंत्रों को पढ़ेंगे और पूजा करेंगे तो नियम से धन-धान्य व सुख-शांति को प्राप्त करेंगे एवं अपनी स्मरण शक्ति व सम्यग्ज्ञान को वृद्धिगंत करते हुए जीवन में चारित्र को ग्रहण कर महान् बनेंगे और परंपरा से मोक्ष प्राप्त करने के अधिकारी हो जावेंगे।

प.पू. आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज अब तक 130 पूजन विधानों की रचना कर चुके उन्हीं में से एक यह सहस्रनाम विधान भी है। अधिकाधिक संख्या में सहस्रनाम पाठ व विधान कर जीवन को सौभाग्यशाली बनाएँ।

संकलन-मुनि विशाल सागर

भक्ति के फूल

आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने श्रावक का प्रथम आवश्यक कर्त्तव्य देवपूजन को माना है। जिनेन्द्र देव की सच्चे भाव से पूजन करने पर ही मुक्तिरूपी फूल की प्राप्ति होती है। वर्तमान में प्राणी यत्र-तत्र कुगुरु, कुदेव, कुशास्त्र की सेवा करके अपने कष्ट, दु:ख से छुटकारा पाना चाहते हैं। जैन होकर के भी जिन्हें जिनेन्द्र देव, शास्त्र, गुरु पर श्रद्धान नहीं है ऐसे प्राणी ही अपना संसार बढ़ा रहे हैं। कहा भी है-

"उड़ान भर हवाओं में, या लगा गोता समन्दर में।
तुझको उतना ही मिलेगा, जितना लिखा मुकद्दर में।।"

इंसान के लिए जब सभी दरवाजे बंद हो जाते हैं उस समय भी एक दरवाजा खुला रहता है, वह दरवाजा है सच्चे देव, शास्त्र, गुरु का। आज के पूर्व कई ऐसे महापुरुष हुए जब उन्होंने अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए दर-दर पर दस्तक दी, तब सभी ने अपना हाथ खींच लिया। उस समय सच्चे भाव से उन्होंने प्रभु को स्मरण किया तो उन्हें अवश्य ही सहारा मिला। "प्रभु के द्वार पर देर तो हो सकती है किन्तु अंधेर नहीं होगा।" कहा भी है-

"प्रभु दर्शन से नूर खिलता है, गमे दिल को सरूर मिलता है।
जो करे भाव से भक्ती प्रभु की, उन्हें कुछ न कुछ जरूर मिलता है।।"

बसन्त उन बीजों, वृक्षों के लिए आता है जो बीज उगना चाहता है, जो अंकुरित हो चुके हैं, उन बीजों को नव जीवन देने के लिए **"आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज"** हमारे जीवन में बसन्त की तरह आए हैं। जो सोये हैं उन्हें जगाने के लिए, जो बैठे हैं उन्हें उठाने के लिए, जो खड़े हैं उन्हें चलाने के लिए एवं जो चल रहे हैं उन्हें मुक्ति मंजिल तक पहुँचाने के लिए। **परम पूज्य प्रज्ञा श्रमण, ज्ञान वारिधी आचार्य गुरुवर श्री विशद सागर जी महाराज** ने स्वलेखनी से अनेक विधान लिखे हैं उसी क्रम में है-"विशद् चौबीस तीर्थंकर माहात्म्य भी लिखा है। अंत में वीर प्रभु से यही प्रार्थना है कि हे भगवान्! हमारा हर कदम गुरुवर के दर्शन, पूजन भक्ति की ओर बढ़े। हर सुबह गुरुवर के द्वार पर हो, और हर शाम गुरुवर की भक्ति करते हुए व्यतीत हो। गुरुवर के चरणों में अंतिम यही भावना है कि-

"गुरुवर मेरी नजरों में, वह तासीर हो जाए।
नजर जिस चीज पर डालूँ, तेरी तस्वीर हो जाए।।"

-ब्र. आरती दीदी (संघस्थ)

आचार्य श्री कुंदकुंद देव द्वारा रचित सिद्ध-भक्ति

लघु सिद्ध-भक्ति (प्राकृत)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणे य णाणे य।
सायार-मणायारा, लक्खण-मेयं तु सिद्धाणं।।1।।
मूलोत्तर-पयडीणं, बंधोदय-सत्त-कम्म-उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणातीद संसारा।।2।।
अट्ठविह-कम्मवियला, सदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठगुणा किदकिच्चा, लोयग्ग णिवासिणो सिद्धा।।3।।
सिद्ध णट्ठट्ठमला, विसुद्धबुद्धी य लद्धि-सब्भावा।
तिहुअण सेर सहरया, पसीयंतु भडारया सव्वे।।4।।
गमणागमण-विमुक्के, विहडिय कम्म पयडि संघारा।
सासय सुहसंमत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं।।5।।
जय मंगलभूदाणं, विमलाणं णाण दंणमयाणं।
तहलोय-सेहराणं, णमो सया सव्व सिद्धाणं।।6।।
सम्मत्त-णाण-दंसण, वीरिय-सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु-मव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं।।7।।
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमंसामि।।8।।

अंचलिका

इच्छामि भंते! सिद्ध भक्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्म दंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं, अट्ठविह-कम्म-विप्प मुक्काणं, अट्ठ गुण संपण्णाण उड्डलोय-मत्थयम्मि पयट्ठियाणं, तव सिद्धाणं, ण सिद्धाणं, संयम सिद्धाणं, चरित्त सिद्धाणं, अतीताणागद-वट्टमाय-कालत्तय सिद्धाणं, सव्व सिद्धाणं, सया णिच्चकालं, अंचेमि पूजमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ सुगइ-गम्म समाहि-मरणं जिण-गुण-संपत्ति होउ मज्झं।

।। इति श्री सिद्ध भक्ति प्रकृति।।

णमोकार महामंत्र

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।1।।

मन्त्रं संसारसारं, त्रिजगदनुपमं, सर्वपापारिमन्त्रं,
संसारोच्छेदमन्त्रं, विषमविषहरं कर्मनिर्मूल मन्त्रम्।
मन्त्रं सिद्धि-प्रदानं, शिवसुखजननं केवलज्ञानमन्त्रं,
मन्त्रं श्री जैनमंत्रं, जप जप जपितं जन्म निर्वाण मंत्रम्।।2।।

आकृष्टि सुरसंपदां विदधते, मुक्तिश्रियो वश्यतां,
उच्चाटं विपदां चतुर्गतिभुवां, विद्वेष-मात्मैनसाम्।
स्तम्भं दुगर्-मनं प्रति प्रयततो, सोहस्य संमोहनं,
पायात्-पंच-नमस्क्रियाक्षरमयी साराधना देवता।।3।।

अनन्तानन्त - संसार, सन्ततिच्छेद - कारणम्।
जिनराज-पदाम्भोज, स्मरणं शरणं मम।।4।।
अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुन्य भाषेन, रक्ष-रक्ष जिनेश्वर।।5।।

न हि त्राता न हि त्राता, न हि त्राता जगत्त्रये।
वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्यति।।6।।

जिने भक्ति-र्जिने भक्तिर्-, जिने भक्ति र्दिने-र्दिने।
सदा-मेऽस्तु सदा-मेऽस्तु, सदा-मेऽस्तु भवे-भवे।।7।।

जिन सहस्रनाम पाठ

पात्र शुद्धि

शोधय सर्व पात्राणि, पूजार्थानपि वारिभः।
समाहितो यथाम्नायं, करोमि सकलीक्रियाम्।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन पात्र शुद्धिं करोमि स्वाहा।

दीपक स्थापना

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, शकललोकसुखाकर-मुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा।।

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

(मुख्य दिशानुसार आग्नेय कोण में दीपक स्थापित करें।)

अग्नि प्रज्जवलन मंत्र

दुरंतमोह सन्तान, कांतारदहन क्षमं।
दर्भैः प्रज्वालयाम्यग्निं, ज्वाला प्रज्लवितांवरं।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं अग्निं प्रज्वालयामि स्वाहा।

(कर्पूर प्रज्वलन करके अग्नि प्रज्वलन करना चाहिये।)

जिन सहस्रनाम पूजा

स्थापना

वृषभादिक चौबिस तीर्थंकर, तीन लोक में पूज्य महान।
एक हजार आठ गुण धारी, जिनका हम करते गुणगान।।
सहस्रनाम की पूजा करते, मन में होके भाव विभोर।
आह्वानन् करते हम उर में, विशद शांति हो चारों ओर।।

ॐ ह्रीं श्री मदादिधर्मसाम्राज्यनायकान्त अष्टाधिक सहस्र शुभनाम धारक श्री जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री मदादिधर्मसाम्राज्यनायकान्त अष्टाधिक सहस्र शुभनाम धारक श्री जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री मदादिधर्म साम्राज्यनायकान्त अष्टाधिक सहस्र शुभानाम धारक श्री जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ज्ञानोदय छन्द)

भटक रहे चारों गतियों में, पल भर शांति न मिल पाई।
सुख समझा जिन विषयों को, वह रहे घोर दुख की खाई।।
अब जन्म जरादिक नाश हेतु, हम पावन नीर चढ़ाते हैं।
श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवाताप में झुलस रहे हम, ज्वाला निज में धधक रही।
भ्रमित हुए अज्ञान तिमिर में, मिली ना हमको राह सही।।
शीतल चन्दन केसर पावन, सुरभित यहाँ चढ़ाते हैं।
श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग की खोटी इच्छाओं ने, मन मैला कर डाला है।
मोह कषायों ने आतम को, किया सदा ही काला है।
अक्षय निधि पाने यह पावन, अक्षत यहाँ चढ़ाते हैं।
श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जलकर काम रोग की ज्वाला, क्षण क्षण हमें जलाती है।
जितना उसको शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है।
हम काम बाण के नाश हेतु, ये पावन पुष्प चढ़ाते हैं।
श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लख चौरासी योनी में हम, भोजन को ही भटकाए।
मन चाहे खाने पर भी हम, तृप्त कभी ना हो पाए।
इस क्षुधा रोग के नाश हेतु, ये व्यंजन सरस चढ़ाते हैं।
श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यातम के नाश हेतु, यह ज्ञान दीप प्रजलाया है।
सोया था उपमान ज्ञान का, हमने आज जगाया है।।
हम दीप जलाकर हे स्वामी, तव चरण आरती गाते हैं।
श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भक्ति वन्दना करके हम, चेतन की शक्ति जगाएँगे।
जग के व्यापारों को तजकर, निज गुण अपने प्रगटाएँगे।
अब अष्ट कर्म के शमन हेतु, पावन ये धूप जलाते हैं।
श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सब अशुभ भाव का फल पाके, दुर्गति के भाजन बन जाते।
शुभ भाव बनाकर भक्ती से, नर सुर गति धर संयम पाते।
अब रत्नत्रय का फल पाने, फल ताजे यहाँ चढ़ाते हैं।
श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दनादि यह द्रव्य आठ, हमने सब यहाँ मिलाए हैं।
जो है अनर्घ्य पद का कारण, वह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
अब पद अनर्घ्य पाने स्वामी, ये पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय अनर्घ्य पदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नाथ कृपा बरसाइये, भक्त करें अरदास।
शिवपथ के राही बनें, पूरी हो मम आस।।
(शांतये शांतिधारा)

गुण अनन्त के कोष जिन, सहस्र आठ हैं नाम।
पुष्पांजलिं करते 'विशद', करके चरण प्रणाम।।
(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा- सहसनाम जिनराज के, गाये मंगलकार।
जयमाला गाते विशद, नत हो बारम्बार॥

(ताटंक छन्द)

तीन लोक के स्वामी जिनवर, केवलज्ञान के धारी हैं।
कर्मघातिया के हैं नाशी, पूर्ण रूप अविकारी हैं॥
पूर्व भवों के पुण्योदय से, पावन नर भव पाते हैं।
उत्तम कुल वय देह सुसंगति, धर्म भावना भाते हैं॥1॥
देव शास्त्र गुरू के दर्शन भी, पुण्य योग से मिलते हैं।
सम्यक् दर्शन ज्ञान आचरण, तप के उपवन खिलते है॥
केवल ज्ञान के धारी हों या, तीर्थंकर का समवशरण।
तीर्थंकर प्रकृति पाते हैं, भव्य जीव करते दर्शन॥2॥
सोलहकारण भव्य भावना, भव्य जीव जो भाते हैं।
पावन तीर्थंकर प्रकृति शुभ, बन्ध तभी कर पाते हैं॥
नरक गती का बन्ध ना हो तो, स्वर्गों में प्राणी जावें।
तीर्थंकर प्रकृति के फल से, भव्य जीव भव सुख पावें॥3॥
गर्भ कल्याणक में सुर आके, दिव्य रत्न वर्साते हैं।
गर्भ कल्याणक के अवसर पर, मेरु पें न्हवन कराते हैं॥
दीक्षा ज्ञान कल्याण मनाकर, पूजा पाठ रचाते हैं।
सहस्रनाम के द्वारा प्रभु पद, जय जय कार लगाते हैं॥4॥
एक हजार आठ शुभ प्रभु के, सार्थक नाम बताए हैं।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, निज सौभाग्य जगाए हैं।
मंत्र कहा प्रत्येक नाम शुभ, उनका करते हैं जो जाप।
'विशद' भाव से ध्याने वालों, के कट जाते सारे पाप॥5॥

दोहा- सहसनाम जिनदेव के, गाये मंगलकार।
उनको ध्याए भाव से, पाए सौख्य अपार॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारकाय श्री जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पूजा करने के लिए, सहसनाम की आज।
आये हैं तव चरण में, पूर्ण करो मम काज॥

॥पुष्पांजलिं क्षिपामि॥ ॥इत्याशीर्वादः॥

जिन सहस्रनाम पूजा

दोहा– श्री जिनवर के हैं विशद, सहस्राष्ट शुभ नाम।
नाम मंत्र का जाप कर, जिन पद करें प्रणाम॥

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

1. प्रथम शतकः

1. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमते नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभुवे नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं वृषभाय नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं शम्भवाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं शम्भवे नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं आत्मभुवे नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं प्रभाय नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवे नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं भोक्त्रे नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभुवे नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं अपुनर्भवाय नमः।
12. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वात्मने नमः।
13. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वलोकेशाय नमः।
14. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतश्चक्षुषे नमः।
15. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षराय नमः।
16. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविदे नमः।
17. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविद्येशाय नमः।
18. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वयोनये नमः।
19. ॐ ह्रीं अर्हं अनश्वराय नमः।
20. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदृश्वने नमः।
21. ॐ ह्रीं अर्हं विभवे नमः।
22. ॐ ह्रीं अर्हं धात्रे नमः।
23. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेशाय नमः।
24. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वलोचनाय नमः।
25. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वव्यापिने नमः।
26. ॐ ह्रीं अर्हं विधये नमः।
27. ॐ ह्रीं अर्हं वेधसे नमः।
28. ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वताय नमः।
29. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतोमुखाय नमः।
30. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वकर्मणे नमः।
31. ॐ ह्रीं अर्हं जगज्ज्येष्ठाय नमः।
32. ॐ ह्रीं अर्हं विश्व मूर्तये नमः।
33. ॐ ह्रीं अर्हं जिनेश्वराय नमः।
34. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदृशे नमः।
35. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभूतेशाय नमः।
36. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वज्योतिषे नमः।
37. ॐ ह्रीं अर्हं अनीश्वराय नमः।
38. ॐ ह्रीं अर्हं जिनाय नमः।
39. ॐ ह्रीं अर्हं जिष्णवे नमः।
40. ॐ ह्रीं अर्हं अमेयात्मने नमः।
41. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरीशाय नमः।
42. ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पतये नमः।
43. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तजिते नमः।
44. ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यात्मने नमः।
45. ॐ ह्रीं अर्हं भव्य बन्धवे नमः।
46. ॐ ह्रीं अर्हं अबन्धनाय नमः।
47. ॐ ह्रीं अर्हं युगादि पुरुषाय नमः।
48. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मणे नमः।
49. ॐ ह्रीं अर्हं पञ्च ब्रह्मयाय नमः।
50. ॐ ह्रीं अर्हं शिवाय नमः।

51. ॐ ह्रीं अर्हं पराय नमः।
52. ॐ ह्रीं अर्हं परतराय नमः।
53. ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्माय नमः।
54. ॐ ह्रीं अर्हं परमेष्ठिने नमः।
55. ॐ ह्रीं अर्हं सनातनाय नमः।
56. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं ज्योतिषे नमः।
57. ॐ ह्रीं अर्हं अजाय नमः।
58. ॐ ह्रीं अर्हं अजन्मने नमः।
59. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मयोनये नमः।
60. ॐ ह्रीं अर्हं अयोनिजाय नमः।
61. ॐ ह्रीं अर्हं मोहारये नमः।
62. ॐ ह्रीं अर्हं विजयिने नमः।
63. ॐ ह्रीं अर्हं जेत्रे नमः।
64. ॐ ह्रीं अर्हं चक्रिणे नमः।
65. ॐ ह्रीं अर्हं दयाध्वजाय नमः।
66. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्ताराये नमः।
67. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तात्मने नमः।
68. ॐ ह्रीं अर्हं योगिने नमः।
69. ॐ ह्रीं अर्हं योगीश्वरार्चिताय नमः।
70. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मविदे नमः।
71. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्म तत्त्वज्ञाय नमः।
72. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मोद्याविदे नमः।
73. ॐ ह्रीं अर्हं यतीश्वराय नमः।
74. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धाय नमः।
75. ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धाय नमः।
76. ॐ ह्रीं अर्हं प्रबुद्धात्माने नमः।
77. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धार्थाय नमः।
78. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध शासनाय नमः।
79. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध सिद्धान्तविद नमः।
80. ॐ ह्रीं अर्हं ध्येयाय नमः।
81. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध साध्याय नमः।
82. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धिताय नमः।
83. ॐ ह्रीं अर्हं सहिष्णवे नमः।
84. ॐ ह्रीं अर्हं अच्युताय नमः।
85. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्ताय नमः।
86. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभविष्णवे नमः।
87. ॐ ह्रीं अर्हं भवोद्भवाय नमः।
88. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूष्णवे नमः।
89. ॐ ह्रीं अर्हं अजराय नमः।
90. ॐ ह्रीं अर्हं अजर्याय नमः।
91. ॐ ह्रीं अर्हं भ्राजिष्णवे नमः।
92. ॐ ह्रीं अर्हं धीश्वराय नमः।
93. ॐ ह्रीं अर्हं अव्ययाय नमः।
94. ॐ ह्रीं अर्हं विभावसे नमः।
95. ॐ ह्रीं अर्हं असम्भूष्णवे नमः।
96. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभूष्णवे नमः।
97. ॐ ह्रीं अर्हं पुरातनाय नमः।
98. ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने नमः।
99. ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिषे नमः।
100. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्परमेश्वराय नमः।

दोहा– श्रीमदादि शत नाम के, धारी श्री जिनेश।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, जिन पद यहाँ विशेष॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमदादि त्रिजगत्परमेश्वरान्त्य शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः।

2. द्वितीय शतकः

101. ॐ ह्रीं अर्हं दिव्य भाषापतये नमः।
102. ॐ ह्रीं अर्हं दिव्याय नमः।
103. ॐ ह्रीं अर्हं पूतवाचे नमः।
104. ॐ ह्रीं अर्हं पूत शासन नमः।
105. ॐ ह्रीं अर्हं पूतात्मने नमः।
106. ॐ ह्रीं अर्हं परम ज्योतिषे नमः।
107. ॐ ह्रीं अर्हं धर्माध्यक्षाय नमः।
108. ॐ ह्रीं अर्हं दमीश्वराय नमः।
109. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपतये नमः।
110. ॐ ह्रीं अर्हं भगवते नमः।
111. ॐ ह्रीं अर्हं अर्हते नमः।
112. ॐ ह्रीं अर्हं अरजसे नमः।
113. ॐ ह्रीं अर्हं विरजसे नमः।
114. ॐ ह्रीं अर्हं शुचिये नमः।
115. ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थकृते नमः।
116. ॐ ह्रीं अर्हं केवलिने नमः।
117. ॐ ह्रीं अर्हं ईशानाय नमः।
118. ॐ ह्रीं अर्हं पूजार्हाय नमः।
119. ॐ ह्रीं अर्हं स्नातकाय नमः।
120. ॐ ह्रीं अर्हं अमलाय नमः।
121. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्त दीप्तिये नमः।
122. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानात्माने नमः।
123. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं बुद्धाय नमः।
124. ॐ ह्रीं अर्हं प्रजापतये नमः।
125. ॐ ह्रीं अर्हं मुक्ताय नमः।
126. ॐ ह्रीं अर्हं शक्ताय नमः।
127. ॐ ह्रीं अर्हं निराबाधाय नमः।
128. ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलाय नमः।
129. ॐ ह्रीं अर्हं भुवनेश्वराय नमः।
130. ॐ ह्रीं अर्हं निरंजनाय नमः।
131. ॐ ह्रीं अर्हं जगत् ज्योतिषे नमः।
132. ॐ ह्रीं अर्हं निरुक्तोक्तये नमः।
133. ॐ ह्रीं अर्हं निरामयाय नमः।
134. ॐ ह्रीं अर्हं अचल स्थितये नमः।
135. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षोभ्याय नमः।
136. ॐ ह्रीं अर्हं कूटस्थाय नमः।
137. ॐ ह्रीं अर्हं स्थाणवे नमः।
138. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षयाय नमः।
139. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रण्ये नमः।
140. ॐ ह्रीं अर्हं ग्रामण्ये नमः।
141. ॐ ह्रीं अर्हं नेत्रे नमः।
142. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणेत्रे नमः।
143. ॐ ह्रीं अर्हं न्यायशास्त्रकृते नमः।
144. ॐ ह्रीं अर्हं शास्त्रे नमः।
145. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपतये नमः।
146. ॐ ह्रीं अर्हं धर्म्याय नमः।
147. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मात्मने नमः।
148. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थकृते नमः।
149. ॐ ह्रीं अर्हं वृषध्वजाय नमः।
150. ॐ ह्रीं अर्हं वृषाधीशाय नमः।
151. ॐ ह्रीं अर्हं वृषकेतवे नमः।
152. ॐ ह्रीं अर्हं वृषायुधाय नमः।
153. ॐ ह्रीं अर्हं वृषाय नमः।
154. ॐ ह्रीं अर्हं वृषपतये नमः।
155. ॐ ह्रीं अर्हं भर्त्रे नमः।
156. ॐ ह्रीं अर्हं वृषभाङ्काय नमः।

157. ॐ ह्रीं अर्हं वृषोद्भवाय नमः।
158. ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यनाभये नमः।
159. ॐ ह्रीं अर्हं भूतात्मने नमः।
160. ॐ ह्रीं अर्हं भूतभृते नमः।
161. ॐ ह्रीं अर्हं भूतभावनाय नमः।
162. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवाय नमः।
163. ॐ ह्रीं अर्हं विभवाय नमः।
164. ॐ ह्रीं अर्हं भास्वते नमः।
165. ॐ ह्रीं अर्हं भवाय नमः।
166. ॐ ह्रीं अर्हं भावाय नमः।
167. ॐ ह्रीं अर्हं भवान्तकाय नमः।
168. ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यगर्भाय नमः।
169. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीगर्भाय नमः।
170. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूतविभवाय नमः।
171. ॐ ह्रीं अर्हं अभवाय नमः।
172. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं प्रभाय नमः।
173. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूतात्मने नमः।
174. ॐ ह्रीं अर्हं भूतनाथाय नमः।
175. ॐ ह्रीं अर्हं जगत्प्रभवे नमः।
176. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वादये नमः।
177. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदृशे नमः।
178. ॐ ह्रीं अर्हं सार्वाये नमः।
179. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञाय नमः।
180. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदर्शनाय नमः।
181. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वात्मने नमः।
182. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकेशाय नमः।
183. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविदे नमः।
184. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोक जिताय नमः।
185. ॐ ह्रीं अर्हं सुगतये नमः।
186. ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुताय नमः।
187. ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुते नमः।
188. ॐ ह्रीं अर्हं सुवाचे नमः।
189. ॐ ह्रीं अर्हं सूरये नमः।
190. ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुताय नमः।
191. ॐ ह्रीं अर्हं विश्रुताय नमः।
192. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतपादाय नमः।
193. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वशीर्षाय नमः।
194. ॐ ह्रीं अर्हं शुचिश्रवसे नमः।
195. ॐ ह्रीं अर्हं सहस्रशीर्षाय नमः।
196. ॐ ह्रीं अर्हं श्रेत्रज्ञाय नमः।
197. ॐ ह्रीं अर्हं सहस्राक्षाय नमः।
198. ॐ ह्रीं अर्हं सहस्रपदे नमः।
199. ॐ ह्रीं अर्हं भूतभव्यभवद्भर्त्रे नमः।
200. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविद्या महेश्वराय नमः।

दोहा– दिव्यभाषा पति आदि शत्, श्री जिनेन्द्र के नाम।
अर्चा करते भाव से, करके चरणम प्रणाम्॥

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्य भाषापत्यादि विश्व विद्या महेश्वरान्त्य शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः।

3. तृतीय शतकः

201. ॐ ह्रीं अर्हं स्थविष्ठाय नमः।
202. ॐ ह्रीं अर्हं स्थविराय नमः।
203. ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठाय नमः।
204. ॐ ह्रीं अर्हं पृष्ठाय नमः।
205. ॐ ह्रीं अर्हं प्रेष्ठाय नमः।
206. ॐ ह्रीं अर्हं वरिष्ठधिये नमः।
207. ॐ ह्रीं अर्हं स्थेष्ठाय नमः।
208. ॐ ह्रीं अर्हं गरिष्ठाय नमः।
209. ॐ ह्रीं अर्हं बंहिष्ठाय नमः।
210. ॐ ह्रीं अर्हं श्रेष्ठाय नमः।
211. ॐ ह्रीं अर्हं अणिष्ठाय नमः।
212. ॐ ह्रीं अर्हं गरिष्ठगिरे नमः।
213. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभृते नमः।
214. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वसृजे नमः।
215. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेशे नमः।
216. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभुजे नमः।
217. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वनायकाय नमः।
218. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वाशिषे नमः।
219. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरूपात्मने नमः।
220. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वजिते नमः।
221. ॐ ह्रीं अर्हं विजितान्तकाय नमः।
222. ॐ ह्रीं अर्हं विभवाय नमः।
223. ॐ ह्रीं अर्हं विभयाय नमः।
224. ॐ ह्रीं अर्हं वीराय नमः।
225. ॐ ह्रीं अर्हं विशोकाय नमः।
226. ॐ ह्रीं अर्हं विजराय नमः।
227. ॐ ह्रीं अर्हं अजरते नमः।
228. ॐ ह्रीं अर्हं विरागाय नमः।
229. ॐ ह्रीं अर्हं विरताय नमः।
230. ॐ ह्रीं अर्हं असंगाय नमः।
231. ॐ ह्रीं अर्हं विविक्ताय नमः।
232. ॐ ह्रीं अर्हं वीतमत्सराय नमः।
233. ॐ ह्रीं अर्हं विनेयजनताबन्धवे नमः।
234. ॐ ह्रीं अर्हं विलीनाशेष कल्मषाय नमः।
235. ॐ ह्रीं अर्हं वियोगाय नमः।
236. ॐ ह्रीं अर्हं योगविदे नमः।
237. ॐ ह्रीं अर्हं विदुषे नमः।
238. ॐ ह्रीं अर्हं विधात्रे नमः।
239. ॐ ह्रीं अर्हं सुविधये नमः।
240. ॐ ह्रीं अर्हं सुधिये नमः।
241. ॐ ह्रीं अर्हं क्षान्तिभाजे नमः।
242. ॐ ह्रीं अर्हं पृथ्वी मूर्तये नमः।
243. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तिभाजे नमः।
244. ॐ ह्रीं अर्हं सलिलात्मकाय नमः।
245. ॐ ह्रीं अर्हं वायुमूर्तये नमः।
246. ॐ ह्रीं अर्हं असंगात्मने नमः।
247. ॐ ह्रीं अर्हं वह्निमूर्त्तये नमः।
248. ॐ ह्रीं अर्हं अधर्मधृक् नमः।
249. ॐ ह्रीं अर्हं सुयज्वने नमः।
250. ॐ ह्रीं अर्हं यजमानात्मने नमः।
251. ॐ ह्रीं अर्हं सुत्वने नमः।
252. ॐ ह्रीं अर्हं सूत्रामपूजिताय नमः।
253. ॐ ह्रीं अर्हं ऋत्विजे नमः।
254. ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञपतये नमः।

255. ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञाय नमः।
256. ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञाङ्गाय नमः।
257. ॐ ह्रीं अर्हं अमृताय नमः।
258. ॐ ह्रीं अर्हं हविषे नमः।
259. ॐ ह्रीं अर्हं व्योममूर्तये नमः।
260. ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्तात्मने नमः।
261. ॐ ह्रीं अर्हं निर्लेपाय नमः।
262. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलाय नमः।
263. ॐ ह्रीं अर्हं अचलाय नमः।
264. ॐ ह्रीं अर्हं सोममूर्तये नमः।
265. ॐ ह्रीं अर्हं सुसौम्यात्मने नमः।
266. ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यमूर्तये नमः।
267. ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रभाय नमः।
268. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रविदे नमः।
269. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रकृते नमः।
270. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रिणे नमः।
271. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रमूर्तये नमः।
272. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तगाय नमः।
273. ॐ ह्रीं अर्हं स्वतन्त्राय नमः।
274. ॐ ह्रीं अर्हं तन्त्रकृते नमः।
275. ॐ ह्रीं अर्हं स्वान्ताय नमः।
276. ॐ ह्रीं अर्हं कृतान्ताय नमः।
277. ॐ ह्रीं अर्हं कृतान्तकृत नमः।
278. ॐ ह्रीं अर्हं कृतिने नमः।
279. ॐ ह्रीं अर्हं कृतार्थाय नमः।
280. ॐ ह्रीं अर्हं सत्कृत्याय नमः।
281. ॐ ह्रीं अर्हं कृतकृत्याय नमः।
282. ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रतवे नमः।
283. ॐ ह्रीं अर्हं नित्याय नमः।
284. ॐ ह्रीं अर्हं मृत्युंजयाय नमः।
285. ॐ ह्रीं अर्हं अमृत्यवे नमः।
286. ॐ ह्रीं अर्हं अमृतात्मने नमः।
287. ॐ ह्रीं अर्हं अमृतोद्भवाय नमः।
288. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मनिष्ठाय नमः।
289. ॐ ह्रीं अर्हं परंबह्ममणे नमः।
290. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मात्मने नमः।
291. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मसम्भवाय नमः।
292. ॐ ह्रीं अर्हं महाब्रह्मपतये नमः।
293. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मेटे नमः।
294. ॐ ह्रीं अर्हं महाब्रह्मपदेश्वराय नमः।
295. ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रसन्नाय नमः।
296. ॐ ह्रीं अर्हं प्रसन्नात्मने नमः।
297. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानधर्मदमप्रभवे नमः।
298. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशमात्मने नमः।
299. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्तात्मने नमः।
300. ॐ ह्रीं अर्हं पुराणपुरुषोत्तमाय नमः।

दोहा– स्थविष्ठादि हैं विशद, श्री जिन क शत नाम।
जिन अर्चा करते यहाँ, पाने हम शिव धाम॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्थविष्ठयादि पुराणपुरुषोत्तमान्त्य शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः।

4. चतुर्थ शतकः

301. ॐ ह्रीं अर्हं महाशोकध्वजाय नमः।
302. ॐ ह्रीं अर्हं अशोकाय नमः।
303. ॐ ह्रीं अर्हं काय नमः।
304. ॐ ह्रीं अर्हं स्त्रष्ट्रे नमः।
305. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मविष्टराय नमः।
306. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मेशाय नमः।
307. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मसम्भूतये नमः।
308. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मनाभये नमः।
309. ॐ ह्रीं अर्हं अनुत्तराय नमः।
310. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मयोनये नमः।
311. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्योनये नमः।
312. ॐ ह्रीं अर्हं इत्याय नमः।
313. ॐ ह्रीं अर्हं स्तुत्याय नमः।
314. ॐ ह्रीं अर्हं स्तुतीश्वराय नमः।
315. ॐ ह्रीं अर्हं स्तवनर्हाय नमः।
316. ॐ ह्रीं अर्हं हृषीकेशाय नमः।
317. ॐ ह्रीं अर्हं जितजेयाय नमः।
318. ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रियाय नमः।
319. ॐ ह्रीं अर्हं गणाधिपाय नमः।
320. ॐ ह्रीं अर्हं गणज्येष्ठाय नमः।
321. ॐ ह्रीं अर्हं गण्याय नमः।
322. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्याय नमः।
323. ॐ ह्रीं अर्हं गणाग्रण्ये नमः।
324. ॐ ह्रीं अर्हं गुणाकराय नमः।
325. ॐ ह्रीं अर्हं गुणाम्भोधये नमः।
326. ॐ ह्रीं अर्हं गुणज्ञाय नमः।
327. ॐ ह्रीं अर्हं गुणनायकाय नमः।
328. ॐ ह्रीं अर्हं गुणादरीणे नमः।
329. ॐ ह्रीं अर्हं गुणोच्छेदिने नमः।
330. ॐ ह्रीं अर्हं निर्गुणाय नमः।
331. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यगिरे नमः।
332. ॐ ह्रीं अर्हं गुणाय नमः।
333. ॐ ह्रीं अर्हं शरण्याय नमः।
334. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यवाचे नमः।
335. ॐ ह्रीं अर्हं पूताय नमः।
336. ॐ ह्रीं अर्हं वरेण्याय नमः।
337. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यनायकाय नमः।
338. ॐ ह्रीं अर्हं अगण्याय नमः।
339. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यधिये नमः।
340. ॐ ह्रीं अर्हं गुण्याय नमः।
341. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यकृते नमः।
342. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यशासनाय नमः।
343. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मारामाय नमः।
344. ॐ ह्रीं अर्हं गुणग्रामाय नमः।
345. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यायपुण्यनिरोधकाय नमः।
346. ॐ ह्रीं अर्हं पापापेताय नमः।
347. ॐ ह्रीं अर्हं विपापात्मने नमः।
348. ॐ ह्रीं अर्हं विपाप्मने नमः।
349. ॐ ह्रीं अर्हं वीतकल्मषाय नमः।
350. ॐ ह्रीं अर्हं निर्द्वन्द्वाय नमः।
351. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मदाय नमः।
352. ॐ ह्रीं अर्हं शान्ताय नमः।
353. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मोहाय नमः।
354. ॐ ह्रीं अर्हं निरुपद्रवाय नमः।

355. ॐ ह्रीं अर्हं निर्निमेषाय नमः।
356. ॐ ह्रीं अर्हं निराहाराय नमः।
357. ॐ ह्रीं अर्हं निष्क्रियाय नमः।
358. ॐ ह्रीं अर्हं निरुपप्लवाय नमः।
359. ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकाय नमः।
360. ॐ ह्रीं अर्हं निरस्तैनसे नमः।
361. ॐ ह्रीं अर्हं निर्धूतागसे नमः।
362. ॐ ह्रीं अर्हं निरास्रवाय नमः।
363. ॐ ह्रीं अर्हं विशालाय नमः।
364. ॐ ह्रीं अर्हं विपुलज्योतिषे नमः।
365. ॐ ह्रीं अर्हं अतुलाय नमः।
366. ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्य वैभवाय नमः।
367. ॐ ह्रीं अर्हं सुसंवृताय नमः।
368. ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्तामने नमः।
369. ॐ ह्रीं अर्हं सुभुजे नमः।
370. ॐ ह्रीं अर्हं सुनयतत्त्वविदे नमः।
371. ॐ ह्रीं अर्हं एकविद्याय नमः।
372. ॐ ह्रीं अर्हं महाविद्याय नमः।
373. ॐ ह्रीं अर्हं मुनये नमः।
374. ॐ ह्रीं अर्हं परिवृढाय नमः।
375. ॐ ह्रीं अर्हं पतये नमः।
376. ॐ ह्रीं अर्हं धीशाय नमः।
377. ॐ ह्रीं अर्हं विद्यानिधये नमः।
378. ॐ ह्रीं अर्हं साक्षिणे नमः।
379. ॐ ह्रीं अर्हं विनेत्रे नमः।
380. ॐ ह्रीं अर्हं विहतान्तकाय नमः।
381. ॐ ह्रीं अर्हं पित्रे नमः।
382. ॐ ह्रीं अर्हं पितामहाय नमः।
383. ॐ ह्रीं अर्हं पात्रे नमः।
384. ॐ ह्रीं अर्हं पवित्राय नमः।
385. ॐ ह्रीं अर्हं पावनाय नमः।
386. ॐ ह्रीं अर्हं गतये नमः।
387. ॐ ह्रीं अर्हं त्रात्रे नमः।
388. ॐ ह्रीं अर्हं भिषग्वराय नमः।
389. ॐ ह्रीं अर्हं वर्याय नमः।
390. ॐ ह्रीं अर्हं वरदाय नमः।
391. ॐ ह्रीं अर्हं परमाय नमः।
392. ॐ ह्रीं अर्हं पुन्से नमः।
393. ॐ ह्रीं अर्हं कवये नमः।
394. ॐ ह्रीं अर्हं पुराणपुरुषाय नमः।
395. ॐ ह्रीं अर्हं वर्षीयसे नमः।
396. ॐ ह्रीं अर्हं वृषभाय नमः।
397. ॐ ह्रीं अर्हं पुरवे नमः।
398. ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठा प्रभवाय नमः।
399. ॐ ह्रीं अर्हं हेतवे नमः।
400. ॐ ह्रीं अर्हं भुवनैकपितामहाय नमः।

दोहा– महाशोक ध्वज आदि सौ, नामों का गुणगान।
करते करते अर्चना, पाएँ पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाशोकध्वाजादि भुवनैक पितामहान्त शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः।

5. पञ्चम शतकः

401. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृक्षलक्षणाय नमः।
402. ॐ ह्रीं अर्हं श्लक्षणाय नमः।
403. ॐ ह्रीं अर्हं लक्षण्याय नमः।
404. ॐ ह्रीं अर्हं शुभलक्षणाय नमः।
405. ॐ ह्रीं अर्हं निरक्षाय नमः।
406. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्डरीकाक्षाय नमः।
407. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्कलाय नमः।
408. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करेक्षणाय नमः।
409. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धिदाय नमः।
410. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसंकल्पाय नमः।
411. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धात्मने नमः।
412. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसाधनाय नमः।
413. ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धबोध्याय नमः।
414. ॐ ह्रीं अर्हं महाबोधये नमः।
415. ॐ ह्रीं अर्हं वर्धमानाय नमः।
416. ॐ ह्रीं अर्हं महर्धिकाय नमः।
417. ॐ ह्रीं अर्हं वेदांगाय नमः।
418. ॐ ह्रीं अर्हं वेदविदे नमः।
419. ॐ ह्रीं अर्हं वेद्याय नमः।
420. ॐ ह्रीं अर्हं जातरूपाय नमः।
421. ॐ ह्रीं अर्हं विदांवराय नमः।
422. ॐ ह्रीं अर्हं वेदवेद्याय नमः।
423. ॐ ह्रीं अर्हं स्वसंवेद्याय नमः।
424. ॐ ह्रीं अर्हं विवेदाय नमः।
425. ॐ ह्रीं अर्हं वदतांतवराय नमः।
426. ॐ ह्रीं अर्हं अनादिनिधनाय नमः।
427. ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्ताय नमः।
428. ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तवाचे नमः।
429. ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तशासनाय नमः।
430. ॐ ह्रीं अर्हं युगादिकृते नमः।
431. ॐ ह्रीं अर्हं युगाधाराय नमः।
432. ॐ ह्रीं अर्हं युगादये नमः।
433. ॐ ह्रीं अर्हं जगदादिजाय नमः।
434. ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्राय नमः।
435. ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रियाय नमः।
436. ॐ ह्रीं अर्हं धीन्द्राय नमः।
437. ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्राय नमः।
438. ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रियार्थदृशे नमः।
439. ॐ ह्रीं अर्हं अनिन्द्रियाय नमः।
440. ॐ ह्रीं अर्हं अहमिन्द्रार्च्याय नमः।
441. ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्रमहिताय नमः।
442. ॐ ह्रीं अर्हं महते नमः।
443. ॐ ह्रीं अर्हं उद्भवाय नमः।
444. ॐ ह्रीं अर्हं कारणाय नमः।
445. ॐ ह्रीं अर्हं कर्त्रे नमः।
446. ॐ ह्रीं अर्हं पारगाय नमः।
447. ॐ ह्रीं अर्हं भवतारकाय नमः।
448. ॐ ह्रीं अर्हं अग्राह्याय नमः।
449. ॐ ह्रीं अर्हं गहनाय नमः।
450. ॐ ह्रीं अर्हं गुह्याय नमः।
451. ॐ ह्रीं अर्हं पराघ्यार्य नमः।
452. ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वराय नमः।
453. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तर्द्धये नमः।
454. ॐ ह्रीं अर्हं अमेयर्द्धये नमः।
455. ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यर्द्धये नमः।
456. ॐ ह्रीं अर्हं समग्रधिये नमः।

457. ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्राय नमः।
458. ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्रहराय नमः।
459. ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यग्राय नमः।
460. ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्यग्राय नमः।
461. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रयाय नमः।
462. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रिमाय नमः।
463. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रजाय नमः।
464. ॐ ह्रीं अर्हं महातपसे नमः।
465. ॐ ह्रीं अर्हं महातेजसे नमः।
466. ॐ ह्रीं अर्हं महोदर्काय नमः।
467. ॐ ह्रीं अर्हं महोदयाय नमः।
468. ॐ ह्रीं अर्हं महायशसे नमः।
469. ॐ ह्रीं अर्हं महाधाम्ने नमः।
470. ॐ ह्रीं अर्हं महासत्त्वाय नमः।
471. ॐ ह्रीं अर्हं महाधृतये नमः।
472. ॐ ह्रीं अर्हं महाधैर्याय नमः।
473. ॐ ह्रीं अर्हं महावीर्याय नमः।
474. ॐ ह्रीं अर्हं महासंपदे नमः।
475. ॐ ह्रीं अर्हं महाबलाय नमः।
476. ॐ ह्रीं अर्हं महाशक्तये नमः।
477. ॐ ह्रीं अर्हं महाज्योतिषे नमः।
478. ॐ ह्रीं अर्हं महाभूतये नमः।
479. ॐ ह्रीं अर्हं महाद्युतये नमः।
480. ॐ ह्रीं अर्हं महामतये नमः।
481. ॐ ह्रीं अर्हं महानीतये नमः।
482. ॐ ह्रीं अर्हं महाक्षान्तये नमः।
483. ॐ ह्रीं अर्हं महादयाय नमः।
484. ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रज्ञाय नमः।
485. ॐ ह्रीं अर्हं महाभागाय नमः।
486. ॐ ह्रीं अर्हं महानन्दाय नमः।
487. ॐ ह्रीं अर्हं महाकवये नमः।
488. ॐ ह्रीं अर्हं महामहसे नमः।
489. ॐ ह्रीं अर्हं महाकीर्तये नमः।
490. ॐ ह्रीं अर्हं महाकान्तये नमः।
491. ॐ ह्रीं अर्हं महावपुषे नमः।
492. ॐ ह्रीं अर्हं महादानाय नमः।
493. ॐ ह्रीं अर्हं महाज्ञानाय नमः।
494. ॐ ह्रीं अर्हं महायोगाय नमः।
495. ॐ ह्रीं अर्हं महागुणाय नमः।
496. ॐ ह्रीं अर्हं महामहपतये नमः।
497. ॐ ह्रीं अर्हं प्राप्तमहापंचकल्याणकाय नमः।
498. ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रभवे नमः।
499. ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रातिहार्याधीशाय नमः।
500. ॐ ह्रीं अर्हं महेश्वराय नमः।

दोहा– श्री वृक्षलक्षणादि सौ, नामें का व्याख्यान।
वंदन कर अर्चा करें, अतिशय महिमावान।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृक्षलक्षणादि महेश्वरान्त्य शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः।

6. षष्ठम् शतकः

501. ॐ ह्रीं अर्हं महामुनये नमः।
502. ॐ ह्रीं अर्हं महामौनिने नमः।
503. ॐ ह्रीं अर्हं महाध्यानिने नमः।
504. ॐ ह्रीं अर्हं महादमाय नमः।
505. ॐ ह्रीं अर्हं महाक्षमाय नमः।
506. ॐ ह्रीं अर्हं महाशीलाय नमः।
507. ॐ ह्रीं अर्हं महायज्ञाय नमः।
508. ॐ ह्रीं अर्हं महामखाय नमः।
509. ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रतपतये नमः।
510. ॐ ह्रीं अर्हं मह्याय नमः।
511. ॐ ह्रीं अर्हं महाकान्तिधराय नमः।
512. ॐ ह्रीं अर्हं अधिपाय नमः।
513. ॐ ह्रीं अर्हं महामैत्रीमयाय नमः।
514. ॐ ह्रीं अर्हं अमेयाय नमः।
515. ॐ ह्रीं अर्हं महोपायाय नमः।
516. ॐ ह्रीं अर्हं महोमयाय नमः।
517. ॐ ह्रीं अर्हं महाकारुनिकाय नमः।
518. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रे नमः।
519. ॐ ह्रीं अर्हं महामन्त्राय नमः।
520. ॐ ह्रीं अर्हं महायतये नमः।
521. ॐ ह्रीं अर्हं महानादाय नमः।
522. ॐ ह्रीं अर्हं महाघोषाय नमः।
523. ॐ ह्रीं अर्हं महेज्याय नमः।
524. ॐ ह्रीं अर्हं महासांपतये नमः।
525. ॐ ह्रीं अर्हं महाध्वरधराय नमः।
526. ॐ ह्रीं अर्हं धुर्याय नमः।
527. ॐ ह्रीं अर्हं महोदार्याय नमः।
528. ॐ ह्रीं अर्हं महिष्ठवाचे नमः।
529. ॐ ह्रीं अर्हं महात्मने नमः।
530. ॐ ह्रीं अर्हं महासांधाम्ने नमः।
531. ॐ ह्रीं अर्हं महर्षये नमः।
532. ॐ ह्रीं अर्हं महितोदयाय नमः।
533. ॐ ह्रीं अर्हं महाक्लेशांकुशाय नमः।
534. ॐ ह्रीं अर्हं शूराय नमः।
535. ॐ ह्रीं अर्हं महाभूतपतये नमः।
536. ॐ ह्रीं अर्हं गुरवे नमः।
537. ॐ ह्रीं अर्हं महापराक्रमाय नमः।
538. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्ताय नमः।
539. ॐ ह्रीं अर्हं महाक्रोधरिपवे नमः।
540. ॐ ह्रीं अर्हं वशिने नमः।
541. ॐ ह्रीं अर्हं महाभवाब्धिसंतारिणे नमः।
542. ॐ ह्रीं अर्हं महामोहाद्रि सूदनाय नमः।
543. ॐ ह्रीं अर्हं महागुणाकराय नमः।
544. ॐ ह्रीं अर्हं क्षान्ताय नमः।
545. ॐ ह्रीं अर्हं महायोगीश्वराय नमः।
546. ॐ ह्रीं अर्हं शमिने नमः।
547. ॐ ह्रीं अर्हं महाध्यानपतये नमः।
548. ॐ ह्रीं अर्हं ध्यातमहाधर्मणे नमः।
549. ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रताय नमः।
550. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मारिघ्ने नमः।
551. ॐ ह्रीं अर्हं आत्मज्ञाय नमः।
552. ॐ ह्रीं अर्हं महादेवाय नमः।
553. ॐ ह्रीं अर्हं महेशित्रे नमः।

554. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वक्लेशापहाय नमः।
555. ॐ ह्रीं अर्हं साधवे नमः।
556. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदोषहराय नमः।
557. ॐ ह्रीं अर्हं हराय नमः।
558. ॐ ह्रीं अर्हं असंख्येयाय नमः।
559. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमेयात्मने नमः।
560. ॐ ह्रीं अर्हं शमात्मने नमः।
561. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशमाकराय नमः।
562. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वयोगीश्वराय नमः।
563. ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्याय नमः।
564. ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतात्मने नमः।
565. ॐ ह्रीं अर्हं विष्टरश्रवसे नमः।
566. ॐ ह्रीं अर्हं दान्तात्मने नमः।
567. ॐ ह्रीं अर्हं दमतीर्थेशाय नमः।
568. ॐ ह्रीं अर्हं योगात्मने नमः।
569. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञान सर्वज्ञाय नमः।
570. ॐ ह्रीं अर्हं प्रधानाय नमः।
571. ॐ ह्रीं अर्हं आत्मने नमः।
572. ॐ ह्रीं अर्हं प्रकृतये नमः।
573. ॐ ह्रीं अर्हं परमाय नमः।
574. ॐ ह्रीं अर्हं परमोदयाय नमः।
575. ॐ ह्रीं अर्हं प्रक्षीणबन्धाय नमः।
576. ॐ ह्रीं अर्हं कामारये नमः।
577. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमकृते नमः।
578. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमशासनाय नमः।
579. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणवायनमः।
580. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणयायनमः।
581. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणाय नमः।
582. ॐ ह्रीं अर्हं प्राणदाय नमः।
583. ॐ ह्रीं अर्हं प्राणतेश्वराय नमः।
584. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमाणाय नमः।
585. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणिधये नमः।
586. ॐ ह्रीं अर्हं दक्षाय नमः।
587. ॐ ह्रीं अर्हं दक्षिणाय नमः।
588. ॐ ह्रीं अर्हं अध्वर्यवे नमः।
589. ॐ ह्रीं अर्हं अध्वराय नमः।
590. ॐ ह्रीं अर्हं आनन्दाय नमः।
591. ॐ ह्रीं अर्हं नन्दयाय नमः।
592. ॐ ह्रीं अर्हं नन्दाय नमः।
593. ॐ ह्रीं अर्हं वन्द्याय नमः।
594. ॐ ह्रीं अर्हं अनिन्द्याय नमः।
595. ॐ ह्रीं अर्हं अभिनन्दनाय नमः।
596. ॐ ह्रीं अर्हं कामघ्ने नमः।
597. ॐ ह्रीं अर्हं कामदाय नमः।
598. ॐ ह्रीं अर्हं काम्याय नमः।
599. ॐ ह्रीं अर्हं कामधेनवे नमः।
600. ॐ ह्रीं अर्हं अररिञ्जयाय नमः।

दोहा– महामुन्यादि नाम शत्, श्री जिनके शुभकार।
जिन अर्चा कर पूजते, जिन पद बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामुन्यादि अरियान्त्य शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः।

7. सप्तम शतकः

601. ॐ ह्रीं अर्हं असंस्कृतसुसंस्काराय नमः।
602. ॐ ह्रीं अर्हं अप्राकृताय नमः।
603. ॐ ह्रीं अर्हं वेकृतान्तकृते नमः।
604. ॐ ह्रीं अर्हं अन्तकृते नमः।
605. ॐ ह्रीं अर्हं कान्तगवे नमः।
606. ॐ ह्रीं अर्हं कान्ताय नमः।
607. ॐ ह्रीं अर्हं चिन्तामणये नमः।
608. ॐ ह्रीं अर्हं अभीष्टदाय नमः।
609. ॐ ह्रीं अर्हं अजिताय नमः।
610. ॐ ह्रीं अर्हं जितकामारये नमः।
611. ॐ ह्रीं अर्हं अमिताय नमः।
612. ॐ ह्रीं अर्हं अमितशासनाय नमः।
613. ॐ ह्रीं अर्हं जितक्रोधाय नमः।
614. ॐ ह्रीं अर्हं जितामित्राय नमः।
615. ॐ ह्रीं अर्हं जितक्लेशाय नमः।
616. ॐ ह्रीं अर्हं जितान्तकाय नमः।
617. ॐ ह्रीं अर्हं जिनेन्द्राय नमः।
618. ॐ ह्रीं अर्हं परमानन्दाय नमः।
619. ॐ ह्रीं अर्हं मुनीन्द्राय नमः।
620. ॐ ह्रीं अर्हं दुन्दुभिस्वनाय नमः।
621. ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्रवन्द्याय नमः।
622. ॐ ह्रीं अर्हं योगीन्द्राय नमः।
623. ॐ ह्रीं अर्हं यतीन्द्राय नमः।
624. ॐ ह्रीं अर्हं नाभिनन्दनाय नमः।
625. ॐ ह्रीं अर्हं नाभेयाय नमः।
626. ॐ ह्रीं अर्हं नाभिजाय नमः।
627. ॐ ह्रीं अर्हं अजाताय नमः।
628. ॐ ह्रीं अर्हं सुव्रताय नमः।
629. ॐ ह्रीं अर्हं मनवे नमः।
630. ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमाय नमः।
631. ॐ ह्रीं अर्हं अभेद्याय नमः।
632. ॐ ह्रीं अर्हं अनत्याय नमः।
633. ॐ ह्रीं अर्हं अनाश्वते नमः।
634. ॐ ह्रीं अर्हं अधिकाय नमः।
635. ॐ ह्रीं अर्हं अधिगुरवे नमः।
636. ॐ ह्रीं अर्हं सुधिये नमः।
637. ॐ ह्रीं अर्हं सुमेधसे नमः।
638. ॐ ह्रीं अर्हं विक्रमिणे नमः।
639. ॐ ह्रीं अर्हं स्वामिने नमः।
640. ॐ ह्रीं अर्हं दुराधर्षाय नमः।
641. ॐ ह्रीं अर्हं निरुत्सुकाय नमः।
642. ॐ ह्रीं अर्हं विशिष्टाय नमः।
643. ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टभुजे नमः।
644. ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टाय नमः।
645. ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्ययाय नमः।
646. ॐ ह्रीं अर्हं कामनाय नमः।
647. ॐ ह्रीं अर्हं अनघाय नमः।
648. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमिने नमः।
649. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमंकरा नमः।
650. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षय्याय नमः।
651. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमधर्मपतये नमः।
652. ॐ ह्रीं अर्हं क्षमिने नमः।
653. ॐ ह्रीं अर्हं अग्राह्याय नमः।
654. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञान निग्राह्याय नमः।
655. ॐ ह्रीं अर्हं ध्यानगम्याय नमः।

656. ॐ ह्रीं अर्हं निरुत्तराय नमः।
657. ॐ ह्रीं अर्हं सुकृतिने नमः।
658. ॐ ह्रीं अर्हं धातवे नमः।
659. ॐ ह्रीं अर्हं इज्यार्हाय नमः।
660. ॐ ह्रीं अर्हं सुनयाय नमः।
661. ॐ ह्रीं अर्हं चतुराननाय नमः।
662. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीनिवासाय नमः।
663. ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्वक्त्राय नमः।
664. ॐ ह्रीं अर्हं चतुरास्याय नमः।
665. ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्मुखाय नमः।
666. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यात्मने नमः।
667. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यविज्ञानाय नमः।
668. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यवाचे नमः।
669. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यशासनाय नमः।
670. ॐ ह्रीं अर्हं सत्याशिषे नमः।
671. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यसन्धानाय नमः।
672. ॐ ह्रीं अर्हं सत्याय नमः।
673. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यपरायणाय नमः।
674. ॐ ह्रीं अर्हं स्थेयसे नमः।
675. ॐ ह्रीं अर्हं स्थवीयसे नमः।
676. ॐ ह्रीं अर्हं नेदीयसे नमः।
677. ॐ ह्रीं अर्हं दवीयसे नमः।
678. ॐ ह्रीं अर्हं दूरदर्शनाय नमः।
679. ॐ ह्रीं अर्हं अणोरणी नमः।
680. ॐ ह्रीं अर्हं अनणवे नमः।
681. ॐ ह्रीं अर्हं गरीयसामाद्यगुरूवे नमः।
682. ॐ ह्रीं अर्हं सदायोगाय नमः।
683. ॐ ह्रीं अर्हं सदाभोगाय नमः।
684. ॐ ह्रीं अर्हं सदातृप्ताय नमः।
685. ॐ ह्रीं अर्हं सदाशिवाय नमः।
686. ॐ ह्रीं अर्हं सदागतये नमः।
687. ॐ ह्रीं अर्हं सदासौख्याय नमः।
688. ॐ ह्रीं अर्हं सदाविद्याय नमः।
689. ॐ ह्रीं अर्हं सदोदयाय नमः।
690. ॐ ह्रीं अर्हं सुघोषाय नमः।
691. ॐ ह्रीं अर्हं सुमुखाय नमः।
692. ॐ ह्रीं अर्हं सौम्याय नमः।
693. ॐ ह्रीं अर्हं सुखदाय नमः।
694. ॐ ह्रीं अर्हं सुहिताय नमः।
695. ॐ ह्रीं अर्हं सुहृदे नमः।
696. ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्ताय नमः।
697. ॐ ह्रीं अर्हं गुप्तिभृते नमः।
698. ॐ ह्रीं अर्हं गोप्त्रे नमः।
699. ॐ ह्रीं अर्हं लोकाध्यक्षाय नमः।
700. ॐ ह्रीं अर्हं दमेश्वराय नमः।

दोहा– असंस्कृत सुसंस्कार को, आदि कर शत् नाम।
पूज रहे हम भाव से, करके विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अर्हं असंस्कृत सुसंस्कारादि दमेश्वरान्त्य शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः।

8. अष्ठम शतकः

701. ॐ ह्रीं अर्हं वृहद्बृहस्पतये नमः।
702. ॐ ह्रीं अर्हं वाग्मिने नमः।
703. ॐ ह्रीं अर्हं वाचस्पतये नमः।
704. ॐ ह्रीं अर्हं उदारधिये नमः।
705. ॐ ह्रीं अर्हं मनीषिणे नमः।
706. ॐ ह्रीं अर्हं धिषणाय नमः।
707. ॐ ह्रीं अर्हं धीमते नमः।
708. ॐ ह्रीं अर्हं शेमुषीशाय नमः।
709. ॐ ह्रीं अर्हं गिरांपतये नमः।
710. ॐ ह्रीं अर्हं नैकरूपाय नमः।
711. ॐ ह्रीं अर्हं नयोत्तुङ्गाय नमः।
712. ॐ ह्रीं अर्हं नैकात्मने नमः।
713. ॐ ह्रीं अर्हं नैकधर्मकृतये नमः।
714. ॐ ह्रीं अर्हं अविज्ञेयाय नमः।
715. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतर्क्यात्मने नमः।
716. ॐ ह्रीं अर्हं कृतज्ञाय नमः।
717. ॐ ह्रीं अर्हं कृतलक्षणाय नमः।
718. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानगर्भाय नमः।
719. ॐ ह्रीं अर्हं दयागर्भाय नमः।
720. ॐ ह्रीं अर्हं रत्नगर्भाय नमः।
721. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभास्वराय नमः।
722. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मगर्भाय नमः।
723. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्गर्भाय नमः।
724. ॐ ह्रीं अर्हं हेमगर्भाय नमः।
725. ॐ ह्रीं अर्हं सुदर्शनाय नमः।
726. ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मीवते नमः।
727. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिदशाध्यक्षाय नमः।
728. ॐ ह्रीं अर्हं दृढीयसे नमः।
729. ॐ ह्रीं अर्हं इनाय नमः।
730. ॐ ह्रीं अर्हं ईशित्रे नमः।
731. ॐ ह्रीं अर्हं मनोहराय नमः।
732. ॐ ह्रीं अर्हं मनोज्ञांगाय नमः।
733. ॐ ह्रीं अर्हं धीराय नमः।
734. ॐ ह्रीं अर्हं गम्भीरशासनाय नमः।
735. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मयूपाय नमः।
736. ॐ ह्रीं अर्हं दयायागाय नमः।
737. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मनेमये नमः।
738. ॐ ह्रीं अर्हं मुनीश्वराय नमः।
739. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रायुधाय नमः।
740. ॐ ह्रीं अर्हं देवाय नमः।
741. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मघ्ने नमः।
742. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मघोषणाय नमः।
743. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघवाचे नमः।
744. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघाज्ञाय नमः।
745. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलाय नमः।
746. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघशासनाय नमः।
747. ॐ ह्रीं अर्हं सुरूपाय नमः।
748. ॐ ह्रीं अर्हं सुभगाय नमः।
749. ॐ ह्रीं अर्हं त्यागिने नमः।
750. ॐ ह्रीं अर्हं समयज्ञाय नमः।
751. ॐ ह्रीं अर्हं समाहिताय नमः।
752. ॐ ह्रीं अर्हं सुस्थिताय नमः।
753. ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्थाय नमः।
754. ॐ ह्रीं अर्हं स्वास्थभाजे नमः।
755. ॐ ह्रीं अर्हं नीरजस्काय नमः।
756. ॐ ह्रीं अर्हं निरुद्धवाय नमः।

757. ॐ ह्रीं अर्हं अलेपाय नमः।
758. ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकात्मने नमः।
759. ॐ ह्रीं अर्हं वीतरागाय नमः।
760. ॐ ह्रीं अर्हं गतस्पृहाय नमः।
761. ॐ ह्रीं अर्हं वश्येन्द्रियाय नमः।
762. ॐ ह्रीं अर्हं विमुक्तात्मने नमः।
763. ॐ ह्रीं अर्हं निःसपत्नाय नमः।
764. ॐ ह्रीं अर्हं जितेन्द्रियाय नमः।
765. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्ताय नमः।
766. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तधामर्षये नमः।
767. ॐ ह्रीं अर्हं मंगलाय नमः।
768. ॐ ह्रीं अर्हं मलघ्ने नमः।
769. ॐ ह्रीं अर्हं अनघाय नमः।
770. ॐ ह्रीं अर्हं अनीदृशे नमः।
771. ॐ ह्रीं अर्हं उपमा भूताय नमः।
772. ॐ ह्रीं अर्हं दिष्टये नमः।
773. ॐ ह्रीं अर्हं दैवाय नमः।
774. ॐ ह्रीं अर्हं अगोचराय नमः।
775. ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्ताय नमः।
776. ॐ ह्रीं अर्हं मूर्तिमते नमः।
777. ॐ ह्रीं अर्हं एकाय नमः।
778. ॐ ह्रीं अर्हं नैकाय नमः।
779. ॐ ह्रीं अर्हं नानैकतत्त्वदृशे नमः।
780. ॐ ह्रीं अर्हं अध्यात्मगम्याय नमः।
781. ॐ ह्रीं अर्हं अगम्यातत्मने नमः।
782. ॐ ह्रीं अर्हं योगविदे नमः।
783. ॐ ह्रीं अर्हं योगवन्दिताय नमः।
784. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वत्रगाय नमः।
785. ॐ ह्रीं अर्हं सदाभाविने नमः।
786. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकालविषयार्थदृशे नमः।
787. ॐ ह्रीं अर्हं शंकराय नमः।
788. ॐ ह्रीं अर्हं शंवदाय नमः।
789. ॐ ह्रीं अर्हं दान्ताय नमः।
790. ॐ ह्रीं अर्हं दमिने नमः।
791. ॐ ह्रीं अर्हं क्षान्तिपरायणाय नमः।
792. ॐ ह्रीं अर्हं अधिपाय नमः।
793. ॐ ह्रीं अर्हं परमानन्दाय नमः।
794. ॐ ह्रीं अर्हं परात्मज्ञाय नमः।
795. ॐ ह्रीं अर्हं परात्पराय नमः।
796. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगद् वल्लभाय नमः।
797. ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यर्च्याय नमः।
798. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगन्मंगलोदयाय नमः।
799. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्पतिपूजांघ्रये नमः।
800. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकाग्रशिखामणये नमः।

दोहा– वृहद वृहस्पतत्यादि शत्, नामों का व्याख्यान।
करके पूजें भाव से, पाएँ सम्यक् ज्ञान।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृहद बृहस्पत्यादि त्रिलोकाग्र शिखामणयन्त्य शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः।

9. नवम शतकः

801. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकाल दर्शिने नमः।
802. ॐ ह्रीं अर्हं लोकेशाय नमः।
803. ॐ ह्रीं अर्हं लोकधात्रे नमः।
804. ॐ ह्रीं अर्हं दृढव्रताय नमः।
805. ॐ ह्रीं अर्हं लोकातिगाय नमः।
806. ॐ ह्रीं अर्हं पूज्याय नमः।
807. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकैकसारथये नमः।
808. ॐ ह्रीं अर्हं पुराणाय नमः।
809. ॐ ह्रीं अर्हं पुरुषाय नमः।
810. ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वाय नमः।
811. ॐ ह्रीं अर्हं कृतपूर्वांगविस्ताराय नमः।
812. ॐ ह्रीं अर्हं आदिदेवाय नमः।
813. ॐ ह्रीं अर्हं पुराणाद्याय नमः।
814. ॐ ह्रीं अर्हं पुरुदेवाय नमः।
815. ॐ ह्रीं अर्हं अधिदेवतायै नमः।
816. ॐ ह्रीं अर्हं युगमुख्याय नमः।
817. ॐ ह्रीं अर्हं युगज्येष्ठाय नमः।
818. ॐ ह्रीं अर्हं युगादिस्थितिदेशकाय नमः।
819. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणवर्णाय नमः।
820. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणाय नमः।
821. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याण नमः।
822. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणलक्षणाय नमः।
823. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणप्रकृतये नमः।
824. ॐ ह्रीं अर्हं दीप्त कल्याणात्मने नमः।
825. ॐ ह्रीं अर्हं विकल्मषाय नमः।
826. ॐ ह्रीं अर्हं विकलंकाय नमः।
827. ॐ ह्रीं अर्हं कलातीताय नमः।
828. ॐ ह्रीं अर्हं कलिलघ्नाय नमः।
829. ॐ ह्रीं अर्हं कलाधराय नमः।
830. ॐ ह्रीं अर्हं देवदेवाय नमः।
831. ॐ ह्रीं अर्हं जगन्नाथाय नमः।
832. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्बन्धवे नमः।
833. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्विभवे नमः।
834. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धितैषिणे नमः।
835. ॐ ह्रीं अर्हं लोकज्ञाय नमः।
836. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगाय नमः।
837. ॐ ह्रीं अर्हं जगदग्रजाय नमः।
838. ॐ ह्रीं अर्हं चराचरगुरवे नमः।
839. ॐ ह्रीं अर्हं गोप्याय नमः।
840. ॐ ह्रीं अर्हं गूढात्मने नमः।
841. ॐ ह्रीं अर्हं गूढगोचराय नमः।
842. ॐ ह्रीं अर्हं सद्योजाताय नमः।
843. ॐ ह्रीं अर्हं प्रकाशात्मने नमः।
844. ॐ ह्रीं अर्हं ज्वलज्ज्वलन सप्रभाय नमः।
845. ॐ ह्रीं अर्हं आदित्यवर्णाय नमः।
846. ॐ ह्रीं अर्हं भर्माभाय नमः।
847. ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रभाय नमः।
848. ॐ ह्रीं अर्हं कनकप्रभाय नमः।
849. ॐ ह्रीं अर्हं सुवर्णवर्णाय नमः।
850. ॐ ह्रीं अर्हं रुक्माभाय नमः।
851. ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यकोटिसमप्रभाय नमः।
852. ॐ ह्रीं अर्हं तपनीयनिभाय नमः।
853. ॐ ह्रीं अर्हं तुंगाय नमः।

854. ॐ ह्रीं अर्हं बालार्काभाय नमः।
855. ॐ ह्रीं अर्हं अनलप्रभाय नमः।
856. ॐ ह्रीं अर्हं सन्ध्याभ्रवभ्रवे नमः।
857. ॐ ह्रीं अर्हं हेमाभाय नमः।
858. ॐ ह्रीं अर्हं तप्तचामीकरच्छवये नमः।
859. ॐ ह्रीं अर्हं निष्टप्तकनकच्छायाय नमः।
860. ॐ ह्रीं अर्हं कनत्काञ्चनसन्निभाय नमः।
861. ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यवर्णाय नमः।
862. ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्णाभाय नमः।
863. ॐ ह्रीं अर्हं शातकुम्भनिभप्रभाय नमः।
864. ॐ ह्रीं अर्हं द्युम्नाभाय नमः।
865. ॐ ह्रीं अर्हं जातरूपाभाय नमः।
866. ॐ ह्रीं अर्हं तप्त जाम्बूनदद्युतये नमः।
867. ॐ ह्रीं अर्हं सुधौतकलधौतश्रिये नमः।
868. ॐ ह्रीं अर्हं प्रदीप्ताय नमः।
869. ॐ ह्रीं अर्हं हाटकद्युतये नमः।
870. ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टेष्टाय नमः।
871. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टिदाय नमः।
872. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टाय नमः।
873. ॐ ह्रीं अर्हं स्पष्टाय नमः।
874. ॐ ह्रीं अर्हं स्पष्टाक्षराय नमः।
875. ॐ ह्रीं अर्हं क्षमाय नमः।
876. ॐ ह्रीं अर्हं शत्रुघ्नाय नमः।
877. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिघाय नमः।
878. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघाय नमः।
879. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशास्त्रे नमः।
880. ॐ ह्रीं अर्हं शासित्रे नमः।
881. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभवे नमः।
882. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तिनिष्ठाय नमः।
883. ॐ ह्रीं अर्हं मुनिज्येष्ठाय नमः।
884. ॐ ह्रीं अर्हं शिवतातये नमः।
885. ॐ ह्रीं अर्हं शिवप्रदाय नमः।
886. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तिदाय नमः।
887. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तिकृते नमः।
888. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तये नमः।
889. ॐ ह्रीं अर्हं कान्तिमते नमः।
890. ॐ ह्रीं अर्हं कामितप्रदाय नमः।
891. ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयोनिधये नमः।
892. ॐ ह्रीं अर्हं अधिष्ठानाय नमः।
893. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिष्ठाय नमः।
894. ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठिताय नमः।
895. ॐ ह्रीं अर्हं सुस्थिराय नमः।
896. ॐ ह्रीं अर्हं स्थावराय नमः।
897. ॐ ह्रीं अर्हं स्थाणवे नमः।
898. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथीयसे नमः।
899. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथिताय नमः।
900. ॐ ह्रीं अर्हं पृथवे नमः।

दोहा– त्रिकाल दर्श्यादिक रहे, श्री जिन के सौ नाम।
मंत्र सभी जो हैं विशद, ध्याएँ श्रेष्ठ ललाम।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकाल दर्शादि पृथवेयन्त्य शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः।

10. दशम शतकः

901. ॐ ह्रीं अर्हं दिग्वासे नमः।
902. ॐ ह्रीं अर्हं वात रसनाय नमः।
903. ॐ ह्रीं अर्हं निर्ग्रन्थेशाय नमः।
904. ॐ ह्रीं अर्हं दिगम्बराय नमः।
905. ॐ ह्रीं अर्हं निःकिञ्चनाय नमः।
906. ॐ ह्रीं अर्हं निराशंसाय नमः।
907. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानचक्षुषे नमः।
908. ॐ ह्रीं अर्हं अमोमुहाय नमः।
909. ॐ ह्रीं अर्हं तेजोराशये नमः।
910. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तौजसे नमः।
911. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानाब्धये नमः।
912. ॐ ह्रीं अर्हं शीलसागराय नमः।
913. ॐ ह्रीं अर्हं तेजोमयाय नमः।
914. ॐ ह्रीं अर्हं अमितज्योतिषे नमः।
915. ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिर्मूर्तये नमः।
916. ॐ ह्रीं अर्हं तमोपहाय नमः।
917. ॐ ह्रीं अर्हं जगच्चूडामणये नमः।
918. ॐ ह्रीं अर्हं दीप्ताय नमः।
919. ॐ ह्रीं अर्हं शंवते नमः।
920. ॐ ह्रीं अर्हं विघ्नविनायकाय नमः।
921. ॐ ह्रीं अर्हं कलिघ्नाय नमः।
922. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मशत्रुघ्नाय नमः।
923. ॐ ह्रीं अर्हं लोकालोकप्रकाशकाय नमः।
924. ॐ ह्रीं अर्हं अनिद्रालवे नमः।
925. ॐ ह्रीं अर्हं अतन्द्रालवे नमः।
926. ॐ ह्रीं अर्हं जागरुकाय नमः।
927. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभामयाय नमः।
928. ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मी पतये नमः।
929. ॐ ह्रीं अर्हं जगज्ज्योतिषे नमः।
930. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मराजाय नमः।
931. ॐ ह्रीं अर्हं प्रजाहिताय नमः।
932. ॐ ह्रीं अर्हं मुमुक्षवे नमः।
933. ॐ ह्रीं अर्हं बन्धमोक्षज्ञाय नमः।
934. ॐ ह्रीं अर्हं जिताक्षाय नमः।
935. ॐ ह्रीं अर्हं जितमन्मथाय नमः।
936. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्तरसशैलूषाय नमः।
937. ॐ ह्रीं अर्हं भव्यपेटकनायकाय नमः।
938. ॐ ह्रीं अर्हं मूलकर्त्रे नमः।
939. ॐ ह्रीं अर्हं अखिलज्योतिषे नमः।
940. ॐ ह्रीं अर्हं मलघ्नाय नमः।
941. ॐ ह्रीं अर्हं मूलकारणाय नमः।
942. ॐ ह्रीं अर्हं आप्ताय नमः।
943. ॐ ह्रीं अर्हं वागीश्वराय नमः।
944. ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयसे नमः।
945. ॐ ह्रीं अर्हं श्रायसोक्तये नमः।
946. ॐ ह्रीं अर्हं निरुक्तवाचे नमः।
947. ॐ ह्रीं अर्हं प्रवक्त्रे नमः।
948. ॐ ह्रीं अर्हं वचसामीशाय नमः।
949. ॐ ह्रीं अर्हं मारजिते नमः।
950. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभावविदे नमः।
951. ॐ ह्रीं अर्हं सुतनवे नमः।
952. ॐ ह्रीं अर्हं तनुनिर्मुक्ताय नमः।
953. ॐ ह्रीं अर्हं सुगताय नमः।
954. ॐ ह्रीं अर्हं हतदुर्नयाय नमः।
955. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशाय नमः।
956. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीश्रितपादाब्जाय नमः।
957. ॐ ह्रीं अर्हं वीतभिये नमः।
958. ॐ ह्रीं अर्हं अभयंकराय नमः।
959. ॐ ह्रीं अर्हं उत्सन्नदोषाय नमः।

960. ॐ ह्रीं अर्हं निर्विघ्नाय नमः।
961. ॐ ह्रीं अर्हं निश्चलाय नमः।
962. ॐ ह्रीं अर्हं लोकवत्सलाय नमः।
963. ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तराय नमः।
964. ॐ ह्रीं अर्हं लोकपतये नमः।
965. ॐ ह्रीं अर्हं लोकचक्षुषे नमः।
966. ॐ ह्रीं अर्हं अपारधिये नमः।
967. ॐ ह्रीं अर्हं धीरधिये नमः।
968. ॐ ह्रीं अर्हं बुद्ध सन्मार्गाय नमः।
969. ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धाय नमः।
970. ॐ ह्रीं अर्हं सूनृत पूतवाचे नमः।
971. ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञापारमिताय नमः।
972. ॐ ह्रीं अर्हं प्राज्ञाय नमः।
973. ॐ ह्रीं अर्हं यतये नमः।
974. ॐ ह्रीं अर्हं नियमितेन्द्रियाय नमः।
975. ॐ ह्रीं अर्हं भदन्ताय नमः।
976. ॐ ह्रीं अर्हं भद्रकृते नमः।
977. ॐ ह्रीं अर्हं भद्राय नमः।
978. ॐ ह्रीं अर्हं कल्पवृक्षाय नमः।
979. ॐ ह्रीं अर्हं वरप्रदाय नमः।
980. ॐ ह्रीं अर्हं समुन्मूलितकर्मारये नमः।
981. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मकाष्ठाशुशुक्षणये नमः।
982. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मण्याय नमः।
983. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मठाय नमः।
984. ॐ ह्रीं अर्हं प्रांशवे नमः।
985. ॐ ह्रीं अर्हं हेयादेयविचक्षणाय नमः।
986. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तशक्तये नमः।
987. ॐ ह्रीं अर्हं अच्छेद्याय नमः।
988. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिपुरारये नमः।
989. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोचनाय नमः।
990. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिनेत्राय नमः।
991. ॐ ह्रीं अर्हं त्र्यम्बकाय नमः।
992. ॐ ह्रीं अर्हं त्र्यक्षाय नमः।
993. ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानवीक्षणाय नमः।
994. ॐ ह्रीं अर्हं समन्तभद्राय नमः।
995. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तारये नमः।
996. ॐ ह्रीं अर्हं धर्माचार्याय नमः।
997. ॐ ह्रीं अर्हं दयानिधये नमः।
998. ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मदर्शिने नमः।
999. ॐ ह्रीं अर्हं जितानंगाय नमः।
1000. ॐ ह्रीं अर्हं कृपालवे नमः।
1001. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मदेशकाय नमः।
1002. ॐ ह्रीं अर्हं शुभंयवे नमः।
1003. ॐ ह्रीं अर्हं सुखसाद्भूताय नमः।
1004. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यराशये नमः।
1005. ॐ ह्रीं अर्हं अनामयाय नमः।
1006. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपालाय नमः।
1007. ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पालाय नमः।
1008. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मसाम्राज्यनायकाय नमः।

दोहा- दिग्वासादिक नाम हैं, एक सौ आठ विशेष।
पूजे ध्याएँ जो 'विशद', पाने सुख अवशेष।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिग्वासादि धर्म साम्राज्य नायकान्ताष्टोत्तर शत् नाम धराहर्त् परमेष्ठिने नमो नमः

जाप्यः-ॐ ह्रीं अस्तोदक नामधारकाय चतुर्विंशति जिनाहाय नमः।

सहस्रनाम चूलिका

चौपाई

विद्वानों से संचित देव, सहस आठ हैं नाम सुएव।
जो इनका करता है ध्यान, उनकी बुद्धी बढ़े महान।।1।।
विद्वत वर्णन किए विशेष, बचनागोचर आप जिनेश।
स्तुति करें जो भी सस्नेह, शुभ फल पाएँ निःसन्देह।।2।।
अतः आप हो बन्धु महान, जगत वैद्य हो आप प्रधान।
इस जग के रक्षक हे नाथ! जगत हितैषी भी हो साथ।।3।।
जगत प्रकाशक हे जिन एक, दर्श ज्ञान उपयोग अनेक।
दर्शज्ञान चारितत्रय रूप, अनन्त चतुष्टय चार स्वरूप।।4।।
प्रभो! पञ्च परमेष्ठि स्वरूप, पञ्च कल्याण नायक पनरूप।
जीवादिक छह द्रव्यों वान, सप्त नयों युत सप्त महान।।5।।
सम्यक्त्वादि आठ गुण रूप, नव लब्धी युत नौ स्वरूप।
महावलादि दश पर्यायवान, रक्षा करो, आप भगवान।।6।।
सहस्र आठ शुभ नाम की माल, से गाते प्रभु की जयमाल।
हम पर कृपा करो हे नाथ!, शिवपथ में प्रभु देना साथ।।7।।
जिनवर का जो भक्त महान, स्तुति करता है गुणगान।
पावन स्तोत्र का करके ध्यान, सब प्रकार से हो कल्याण।।8।।
इन्द्रों के वैभव का लोग, पाने का चाहें संयोग।
पुण्य बढ़ाना चाहो आप, करो स्तोत्र पाठ या जाप।।9।।
जग ये रहा चराचरवान, इन्द्र ने प्रभु का कर गुणगान।
करने प्रभु के तीर्थ विहार, निम्न प्रार्थना की शुभकार।।10।।
करने शुभ गुण का गुणगान, स्तुति करें भव्य गुणगान।
हो स्तुत्व पुरुषारथवान, स्तुति का फल मोक्ष निधान।।11।।

(शम्भू छन्द)

जग में जो स्तुत्य कहे हैं, स्तोता ना हैं गुणगान।
जिनका ध्यान करें योगीजन, वे ना किसी का करते ध्यान।।

जो नन्तव्य पक्ष का द्रष्टा, सबसे ही करवाए नमन।
श्री युत सर्व प्रधान लोक में, जिन त्रिलोक के हैं गुरुजन॥12॥
इन्द्रराज जिनके पद पूजे, जो हैं अनन्त चुष्टयवान।
भव्य जीव रूपी कमलों को, करें प्रफुल्लित जो गुणगान॥
मानस्तंभ देखने झुकते, समवशरण युत वैभववन्त।
पाप रहित आधीश्वर जिनको, भक्त नमन करते गुणवन्त॥13॥

॥इति सहस्रनाम स्तोत्र समाप्त॥

समुच्चय जाप्य–ॐ ह्रीँ अर्हं अष्टोत्तर सहस्रनाम धारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- सहस्रनाम द्वारा किया, जिनवर का गुणगान।
जयमाला गाते यहाँ, पाने शिव सोपान॥

चौपाई

जय-जय तीन लोक के स्वामी, त्रिभुवनपति हे अन्तर्यामी।
पूर्व भवों में पुण्य कमाया, पुण्योदय से नरभव पाया॥
तन निरोग पाकर के भाई, सुकुल प्राप्त कीन्हा सुखदायी।
तुमने उर में ज्ञान जगाया, अतिशय सम्यक् दर्शन पाया॥
भाव सहित संयम अपनाए, भव्य भावना सोलह भाए।
तीर्थंकर प्रकृति शुभ पाई, स्वर्गों के सुख भोगे भाई॥
गर्भादिक कल्याणक पाए, रत्न इन्द्र भारी बरषाए।
छह महीने पहले से भाई, देवों ने नगरी सजवाई॥
जन्म कल्याणक प्रभु जी पाये, सहस्राष्ट शुभ गुण प्रगटाए।
गुणानुरूप नाम भी पाए, सहस्र आठ संख्या में गाए॥
नाम सभी सार्थक हैं भाई, सहस्र नाम की महिमा गाई।
तीर्थंकर पदवी के धारी, नामों के होते अधिकारी॥
मंत्र सभी यह नाम कहाए, मंत्रों को श्रद्धा से गाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाए, जो भी इनका ध्यान लगाए॥
महिमा का न पार है भाई, श्री जिनेन्द्र की है प्रभुताई।
जगत प्रकाशी जिन कहलाए, ज्ञानादर्श सुगुण प्रभु पाए॥
श्री जिनेन्द्र रत्नत्रय पाए, अनंत चतुष्टय प्रभु प्रगटाए।
धर्म चक्र शुभ प्रभु जी धारे, समवशरणयुत किए विहारे॥

समवशरण शुभ देव बनाते, श्री जिनवर की महिमा गाते।
प्राणी अतिशय पुण्य कमाते, पूजा अर्चा कर हर्षाते॥
जय-जयकार लगाते भाई, यह है जिनवर की प्रभुताई।
पुरुषोत्तम यह नाम कहाए, उनकी यह शुभ माल बनाए॥
अर्पित करते तव पद स्वामी, करते हम तव चरण नमामी।
नाथ! प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी॥
रत्नत्रय की निधि हम पाएँ, शिवपथ के राही बन जाएँ।
शिव स्वरूप हम भी प्रगटाएँ, शिवपुर जाकर शिवसुख पाएँ॥

दोहा- सहस्रनाम का कंठ में, धारें कंठाहार।
विशद गुणों को प्राप्त कर, पावें शिव का द्वार॥

ॐ ह्रीँ अर्हं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिन गुण के अनुपम सुमन, जग में रहे महान्।
पुष्पांजलि कर पूजते, पाने पद निर्वाण॥

॥पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

सहस्रनाम की आरती

आज करें हम सहस्रनाम की, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर लाए घृत के, जिनवर के दरबार... हो जिनवर...
हम सब उतारे मंगल आरती.....
सहस्रनाम के धारी जिनवर, सहस्र गुणों को पाते।
एक हजार आठ गुणधारी, तीर्थंकर कहलाते॥ हो जिनवर...॥1॥
श्री जिनेन्द्र के तन में नौ सौ, व्यंजन विस्मयकारी।
सुगुण एक सौ आठ जिनेश्वर, पाते अतिशयकारी॥ हो जिनवर...॥2॥
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिन इसके अधिकारी।
अनन्त चतुष्टय के धारी जिन, होते मंगलकारी॥ हो जिनवर...॥3॥
सार्थक नाम प्राप्त करते हैं, तीर्थंकर अविकारी।
अनुक्रम से बन जाते हैं जो, शिवपद के अधिकारी॥ हो जिनवर...॥4॥
सहस्रनाम की पूजा अर्चा, करने को हम आए।
'विशद' जगे सौभाग्य हमारे, चरण-शरण को पाए॥ हो जिनवर...॥5॥

सहस्रनाम चालीसा

दोहा- अर्हत्सिद्धाचार्य पद, उपाध्याय जिन संत।
सहस्रनाम जिनराज के, नमूँ अनन्तानन्त॥

(चौपाई छन्द)

है आकाश अनन्तानन्त, जिसका नहीं है कोई अंत।
जिसके मध्य है लोकाकाश, भरा है छह द्रव्यों से खास॥
ऊर्ध्व अधो अरु मध्य प्रधान, तीन लोक कहते भगवान।
मध्य लोक में जम्बू द्वीप, मेरू जम्बू वृक्ष समीप॥
जम्बू द्वीप घातकी खण्ड, पुष्करार्द्ध भी रहा अखण्ड।
भरतैरावत और विदेह, क्षेत्र कर्म भूमि का ऐह॥
आर्य खण्ड में रहते आर्य, ऐसा कहते जैनाचार्य।
उत्सर्पण अवसपर्ग काल, भरतैरावत रहे त्रिकाल॥
दुषमा सुषमा काल विशेष, जिसमें चौबिस बनें जिनेश।
जिन विदेह में रहे त्रिकाल, विद्यमान रहते हर हाल॥
जो भी पुण्य कमाय अतीव, उसका फल वह पावे जीव।
भव्य भावना सोलह भाय, जीव वही यह पदवी पाय॥
तीर्थंकर प्रकृति का बंध, जो कषाय करते हैं मंद।
सम्यक् दृष्टी जीव महान, केवली द्विक के पद में आन॥
मिलता है जब कोई निमित्त, भोगों से उठ जाता चित्त।
भव भोगों से होय विरक्त, शुभ भोगों में हो अनुरक्त॥
सत् संयम पाते शुभकार, लेते महाव्रतों को धार।
कर्म निर्जरा करें महान, निज आतम का करके ध्यान॥
क्षायक श्रेणी को फिर पाय, अपना केवलज्ञान जगाय।
त्रिभुवन चूड़ामणि बन जाय, तीर्थंकर के गुण प्रगटाय॥
क्षायिक नव लब्धी कर प्राप्त, बनते जिन तीर्थंकर आप्त।
चिन्तित चिंतामणि कहलाय, कल्पतरू फल वांछित पाय॥
बनते समवशरण के ईश, इन्द्र झुकाते पद में शीश।
अनन्त चतुष्टय पाते नाथ, पंच कल्याणक भी हों साथ॥
तीन गति से आते जीव, पुण्य कमाते वहा अतीव।
दिव्य देशना सुनके लोग, मुक्ती पथ का पाते योग॥

भक्ती को आते शत् इन्द्र, सुर-नर-पशु आते अहमिन्द्र।
परम पिता जगती पति ईश, ऋद्धीधर हे नाथ! ऋशीष॥
युग दृष्टा प्रभु रहे महान, तीर्थोन्नायक हैं भगवान।
वाणी में जैनागम सार, अमृत रस की बहती धार॥
भक्त आपके आते द्वार, करते हैं निशदिन जयकार।
करने से प्रभु का गुणगान, होती है कर्मों की हान॥
महिमा गाकर के सब देव, हर्षित होते सभी सदैव।
हम भी महमा गाते नाथ!, चरणों झुका रहे हैं माथ॥
विविध नाम से है गुणगान, सहस्रनाम स्त्रोत महान।
सार्थक नाम मयी स्तोत्र, श्रेष्ठ धर्म का है जो स्त्रोत॥
सहस्रनाम कहलाए स्त्रोत, विशद धर्म का है जो स्त्रोत॥
श्रीमान आदिक हैं सहस्र नाम, को करते हम सतत् प्रणाम।
पाठ किए हो ज्ञान प्रकाश, विशद गुणों का होय विकास॥
वन्दन करते हम शत् बार, पाने भवोदधी से पार।
मेरा हो आतम कल्याण, पावें हम भी पद निर्वाण॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, सहस्रनाम का पाठ।
पढ़ते हैं जो भाव से, होते ऊँचे ठाठ॥
ऋद्धि-सिद्धि आनन्द हो, शांती मिले अपार॥
'विशद' ज्ञान पाके मिले, मुक्ति वधू का प्यार॥

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य- खण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्ते मध्ये चैत्र मासे शुक्लपक्षे सप्तमी गुरुवासरे अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2541 वि.सं. 2071 विशद जिनसहस्रनाम विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

सम्मेदशिखर कूट पूजन

स्थापना

नन्दन वन सी छटा निराली, हरियाली है चारों ओर।
खग मृग की किलकारी करती, मन मधुकर को भाव विभोर॥
कण-कण पावन है भूधर का, क्षण-क्षण होते कर्म शमन।
तीर्थ राज सम्मेद शिखर का, करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रीं तीर्थराज सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् अत्र मम सन्निहितो भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ज्ञानोदय छन्द)

ठण्डा गर्म नीर हो कैसा, आग बुझाए यथा-तथा।
पावन तीर्थ क्षेत्र की यात्रा, जन्म मरण की हरे व्यथा॥
शास्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम॥1॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भ्रमण किया चारों गतियों में, निन्दा की दुर्गन्ध मिली।
सिद्ध क्षेत्र का वन्दन करने, आतम की हर कली खिली॥
शास्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम॥2॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्त्रों जैसे जीवन बदले, अब हालात बदलना है।
करके सिद्ध क्षेत्र की यात्रा, मोक्ष मार्ग पर चलना है॥
शास्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम॥3॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने हार मानकर, जिन चरणों टेका माथा।
हुए सिद्ध जो सिद्ध भूमि से, गाते हम उनकी गाथा।

शास्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम॥4॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भड़के भूख भोग से जैसे, घी से आग भड़क जाए।
सिद्धों के चरणों में हमने, क्षुधा हरण को गुण गाए॥
शास्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम॥5॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन आंधी या तूफानों से, बुझ जाते दीपक अपने।
चेतन दीप जले जिन चरणों, पूर्ण होंय सारे सपने॥
शास्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम॥6॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की आकुलता सुख दुख, भेद भाव दुख की दात्री।
कर्म धूल सब तजी आपने, पूजें धूप चढ़ा यात्री॥
शास्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम॥7॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल खाने का फल क्या होता, लोग समझ ना पाते हैं।
फल के त्यागी यही समझ के, शिव फल पर ललचाते हैं॥
शास्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम॥8॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य प्रभा श्री जिन सिद्धों की, कण-कण में भू पे बिखरे।
वैसे मूल्य अर्घ्य का का क्या हो, फिर भी आत्म रूप निखरे॥

शास्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम॥9॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यावली

दोहा- कल्पतरु के पुष्प ले, पुष्पांजलि वर्षाय।
शास्वत तीरथ राज को, वन्दन कर हर्षाय॥

पुष्पांजलि क्षिपेत्

तीर्थंकर चौबीस के, चौबिस गणी प्रधान।
अर्घ्य चढ़ा वन्दन करें, पाने शिव सोपान॥1॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरादि विभिन्न स्थानों से मोक्ष पधारे उन पवित्र स्थानों को एवं उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कूट ज्ञानधर से गये, कुन्थुनाथ शिव लोक।
अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, देते हैं हम ढोक॥2॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्रादि 96 कोड़ाकोड़ि 96 करोड़ 32 लाख 96 हजार 742 मुनि ज्ञानधर कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए मित्रधर कूट से, नमि जिनवर शिवराज।
अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, वन्दन करते आज॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्रादि 9 कोड़ाकोड़ि 1 अरब 45 लाख 7 हजार 942 मुनि मित्रधर कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ जिनराज का, गाया नाटक कूट।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, जाएँ कर्म से छूट॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्रादि 99 करोड़ 99 लाख 99 हजार 999 मुनि नाटक कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवपद पाए मल्लि जिन, संबल कूट महान।
अर्घ्य चढ़ा जिनका विशद, करते हम गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि 96 करोड़ मुनि संबल कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए संकुल कूट से, जिन श्रेयांस शिवधाम।
अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, करते विशद प्रणाम॥6॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रादि 96 कोड़ाकोड़ि 96 करोड़ 96 लाख 9 हजार 542 मुनि संकुल कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत भगवान का, सुप्रभ कूट विशाल।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, वन्दन करें त्रिकाल॥7॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्रादि 1 कोड़ाकोड़ि 99 लाख 7 हजार 480 मुनि सुप्रभ कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म प्रभु भगवान का, मोहन कूट विशेष।
अर्चा करते भाव से, पाने निज स्वदेश॥8॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्रादि 99 करोड़ 87 लाख 43 हजार 790 मुनि मोहन कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्जर कूट से पाए शिव, मुनिसुव्रत भगवान।
जिन अर्चा कर जीव कई, किए आत्म कल्याण॥9॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्रादि 99 कोड़ाकोड़ि 99 करोड़ 99 लाख 999 मुनि निर्जर कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ललित कूट से शिव गये, चन्द्र प्रभु तीर्थेश।
अर्चा करते जिन चरण, देकर अर्घ्य विशेष॥10॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्रादि 984 अरब 72 करोड़ 80 लाख 84 हजार 555 मुनि ललित कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिव पाए कैलाश गिरि से, श्री आदि जिनेश।
जिन चरणों की अर्चना, करते भक्त विशेष॥11॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्रादि 10 हजार मुनि कैलाश पर्वत से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलनाथ जिनेन्द्र का, विद्युतवर है कूट।
अर्चा करते जिन चरण, श्रद्धा धार अटूट॥12॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि 18 कोड़ाकोड़ि 42 करोड़ 32 लाख 42 हजार 905 मुनि विद्युत कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कूट स्वयंभू से हुए, जिनानन्त शिवकार।
अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, वन्दू बारम्बार॥13॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्रादि 96 कोड़ाकोड़ि 70 करोड़ 70 लाख 70 हजार 700 मुनि स्वयंप्रभ कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल कूट से शिव गये, जिनवर सम्भवनाथ।
अर्चा करते जिन चरण, ऊपर करके हाथ॥14॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्रादि 9 कोड़ाकोड़ि 12 लाख 42 हजार 500 मुनि धवल कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पापुर से शिव गये, वासुपूज्य भगवान।
जिनपद करते भाव से, अर्घ्य चढ़ा गुणगान॥15॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि मंदारगिरि (चम्पापुर) से 1 हजार मुनि मुक्त हुए उनके चरण कमल में योगत्रय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनन्दन जिनराज का, कूट रहा आनन्द।
जिनकी अर्चा कर विशद, आश्रव होवे मंद॥16॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्रादि 72 कोड़ाकोड़ि 70 करोड़ 70 लाख 42 हजार 700 मुनि आनंद कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष गये श्री धर्म जिन, कूट सुदत्त महान।
जिनकी अर्चा कर मिले, भव्यों को निर्वाण॥17॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि 29 कोड़ाकोड़ि 19 करोड़ 9 लाख 9 हजार 765 मुनि मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमति नाथ जी शिव गये, अविचल कूट है नाम।
जिनके चरणों में विशद, बारम्बार प्रणाम॥18॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्रादि 1 कोड़ाकोड़ि 84 करोड़ 72 लाख 81 हजार 700 मुनि अविचल कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कूट कुन्दप्रभ शांति जिन, का है जगत प्रसिद्ध।
ऋषियों के पद पूजते, हुए अभी तक सिद्ध॥19॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रादि 9 कोड़ाकोड़ि 9 लाख 9 हजार 999 मुनि सुकुन्द कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावापुर सर मध्य से, हुए वीर जिन सिद्ध।
पूज रहे जिन पाद हम, जो हैं जगत प्रसिद्ध॥20॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी पावापुर के पद्म सरोवर से 26 मुनि सहित मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्व जिन शिव गये, कूट प्रभास सुनाम।
मुक्त हुए जो अन्य ऋषि, तिन पद विशद प्रणाम॥21॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि 49 कोड़ाकोड़ि 84 करोड़ 72 लाख 7 हजार 742 मुनि प्रभास कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ती पाए विमल जिन, कूट कहाए सुवीर।
जिनकी अर्चा हम करें, पाने भव का तीर॥22॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्रादि 70 कोड़ाकोड़ि 60 लाख 6 हजार 742 मुनि सुवीर कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति सिद्धवर कूट से, पाए अजित जिनेश।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, श्री जिन चरण विशेष॥23॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्रादि 1 अरब 80 करोड़ 54 लाख मुनि सिद्धवर कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध हुए गिरनार से, नेमिनाथ भगवान।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, करके चरण प्रणाम॥24॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्रादि शम्बू प्रद्युम्न अनिरुद्ध इत्यादि 72 करोड़ 700 मुनि गिरनार पर्वत से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णभद्र शुभ कूट से, पाए जो शिवधाम।
पार्श्वनाथ जिन के चरण, बारम्बार प्रणाम॥25॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि 82 करोड़ 84 लाख 45 हजार 742 मुनि स्वर्णभद्र कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अर्चा शास्वत तीर्थ की, करते बारम्बार।
पुष्पांजलि करते तथा, देते शांतीधार॥

जाप:-ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा- शास्वत तीरथ राज है, गिरि सम्मेद महान।
अर्चा करते भाव से, पाने पद निर्वाण॥

छन्द-तामरस

जय जय तीरथ राज नमस्ते, तारण तरण जहाज नमस्ते।
गणधर पद चौबीस नमस्ते, सिद्ध अनन्त ऋषीश नमस्ते॥1॥
प्रथम ज्ञानधर कूट नमस्ते, कूट मित्राधर पूज्य नमस्ते।
नाटक कूट प्रधान नमस्ते, संवल कूट महान नमस्ते॥2॥
संकुल कूट विशेष नमस्ते, सुप्रभ कूट जिनेश नमस्ते।
मोहन कूट पे जाय नमस्ते, निर्जर कूट जिनाय नमस्ते॥3॥
ललित कूट है दूर नमस्ते, अष्टापद भरपूर नमस्ते।
विद्युतवर मनहार नमस्ते, कूट स्वयंभू सार नमस्ते॥4॥
धवल कूट है स्वेत नमस्ते, चम्पापुर जी क्षेत्र नमस्ते।
आनन्द कूट गिरीश नमस्ते, कूट सुदत्त ऋषीश नमस्ते॥5॥
अविचल कूट मुनीश नमस्ते, कूट कुन्दप्रभ शीश नमस्ते।
पावापुर जी क्षेत्र नमस्ते, कूट प्रभास विशेष नमस्ते॥6॥
पावन कूट सुवीर नमस्ते, कूट सिद्धवर तीर नमस्ते।
गिरि गिरनार अटूट नमस्ते, स्वर्णभद्र शुभ कूट नमस्ते॥7॥

दोहा- महिमा तीर्थ सम्मेद गिरि, की है अपरम्पार।
"विशद" भाव से पूजते, नत हो बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीर्थराज की वंदना, करके प्रभु गुणगान।
मोक्षमार्ग पर जो बढ़ें, पावें शिव सोपान॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

चौंसठ ऋद्धि अर्घ

दोहा- चौंसठ ऋद्धी के यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
पुष्पांजली करते प्रथम, पाने सुपद अनर्घ्य॥

1. ॐ ह्रीं अवधिज्ञान बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञान बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं केवलज्ञान बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं पादानुसारीणी बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं संभिन्न श्रोतृत्व बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं दूरास्वादित्व बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
9. ॐ ह्रीं दूर स्पर्शत्व बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
10. ॐ ह्रीं दूरघ्राणत्व बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
11. ॐ ह्रीं दूरश्रवणत्व बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
12. ॐ ह्रीं दूरदर्शित्व बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं दश पूर्वित्व बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं चतुर्दश पूर्वित्व बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
15. ॐ ह्रीं अष्टांग महानिमित्त बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
16. ॐ ह्रीं प्रज्ञा श्रमण बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
17. ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्ध बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं वादित्व बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
19. ॐ ह्रीं अणिमा विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
20. ॐ ह्रीं महिमा विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
21. ॐ ह्रीं लघिमा विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
22. ॐ ह्रीं गरिमा विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
23. ॐ ह्रीं प्राप्ति विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
24. ॐ ह्रीं प्रकाम्य विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

25. ॐ ह्रीं ईशत्व विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
26. ॐ ह्रीं वशित्व विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
27. ॐ ह्रीं अप्रतिघात विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
28. ॐ ह्रीं अंतर्ध्यान विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
29. ॐ ह्रीं कामरूप विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
30. ॐ ह्रीं नभ चारण क्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
31. ॐ ह्रीं जल चारण क्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
32. ॐ ह्रीं जंघा चारण क्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
33. ॐ ह्रीं पत्र चारण क्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
34. ॐ ह्रीं अग्नि चारण क्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
35. ॐ ह्रीं मेघ चारण क्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
36. ॐ ह्रीं तंतु चारण क्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
37. ॐ ह्रीं ज्योतिष चारण क्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
38. ॐ ह्रीं मरुच्चारण क्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
39. ॐ ह्रीं उग्रतपः ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
40. ॐ ह्रीं दीप्ततपः ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
41. ॐ ह्रीं तप्ततपः ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
42. ॐ ह्रीं महातपः ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
43. ॐ ह्रीं घोरतपः ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
44. ॐ ह्रीं घोर पराक्रम तपः ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
45. ॐ ह्रीं अघोर ब्रह्मचारित्व तपः ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
46. ॐ ह्रीं मनोबल ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
47. ॐ ह्रीं वचनबल ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
48. ॐ ह्रीं कायबल ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
49. ॐ ह्रीं आमर्शौषधि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
50. ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
51. ॐ ह्रीं जल्लौषधि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
52. ॐ ह्रीं मलौषधि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

53. ॐ ह्रीं विप्रुषौषधि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
54. ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
55. ॐ ह्रीं मुखनिर्विष ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
56. ॐ ह्रीं दृष्टि निर्विष ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
57. ॐ ह्रीं आशी र्विष रस ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
58. ॐ ह्रीं दृष्टि र्विष रस ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
59. ॐ ह्रीं क्षीरस्रावि रस ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
60. ॐ ह्रीं मधुस्रावि रस ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
61. ॐ ह्रीं अमृतस्रावि रस ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
62. ॐ ह्रीं सर्पिस्रावि रस ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
63. ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
64. ॐ ह्रीं अक्षीण महालय ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- बुद्धि विक्रिया सुतप बल, चारण औषधि रस अक्षीण।
चौंसठ भेद हैं इनके जिनगणि, पावें मुनिवर ज्ञान प्रवीण॥
भव्य जीव जिन अर्चा करके, पाएँ अतिशय पुण्य निधान।
विशद भाव अर्चा करते, पाने को हम पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं चतुषष्टि ऋद्धिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विशदसागर जी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर!, थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें, गुरु चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमेष्ठि मन्त्र

परमेष्ठियादिभिर्मंत्रै षड्विंशतिमितैरथ।
इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वे तावतिथाहुतिः।।7।।

1. ॐ सत्यजाताय नमः स्वाहा।
2. ॐ अर्हज्जाताय नमः स्वाहा।
3. ॐ परमजाताय नमः स्वाहा।
4. ॐ परमार्हताय नमः स्वाहा।
5. ॐ परमरूपाय नमः स्वाहा।
6. ॐ परमतेजसे नमः स्वाहा।
7. ॐ परमगुणाय नमः स्वाहा।
8. ॐ परमस्थानाय नमः स्वाहा।
9. ॐ परमयोगिने नमः स्वाहा।
10. ॐ परमभाग्याय नमः स्वाहा।
11. ॐ परमर्द्धये नमः स्वाहा।
12. ॐ परमप्रसादाय नमः स्वाहा।
13. ॐ परमकांक्षिताय नमः स्वाहा।
14. ॐ परमविज्ञानाय नमः स्वाहा।
15. ॐ परमदर्शनाय नमः स्वाहा।
16. ॐ परमसुखाय नमः स्वाहा।
17. ॐ परमवीर्याय नमः स्वाहा।
18. ॐ परमविजयाय नमः स्वाहा।
19. ॐ परमसर्वज्ञाय नमः स्वाहा।
20. ॐ अर्हते नमः स्वाहा।
21. ॐ परमेष्ठिने नमो नमः स्वाहा।
22. ॐ परमनेत्रे नमः स्वाहा।

23. ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे। त्रैलौक्यविजय त्रैलौक्यविजय। धर्ममूर्ते धर्ममूर्ते। धर्मनेमे धर्मनेमे स्वाहा।

आशीर्वाद मन्त्र

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु। विश्वशांति एवं कल्याण की भावना से निम्न शांतिमंत्रों की आहुति दे सकते हैं।

वृहच्छान्ति आहुति-मन्त्रः

नव्येन गव्येन घृतेन सम्यक्-नाहुतिभिः कृताभिः।
होमं विधस्यामि समित्समान, संख्याभिरत्यूर्जितशान्ति-मन्त्रौः।।67।।प्र.ति.
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।

चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा सिद्ध लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु-कुरु स्वाहा।।1।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्री शान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्व-परकृच्क्षुद्रोपद्रवनाशनाय सर्वक्षामडामर-विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु-कुरु स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रूं क्ष्रूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्त्र-खण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः ह्रूं सर्वशान्ति कुरु-कुरु स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत-विद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वविघ्नशान्तिर्भवतु स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रैं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः सर्वशान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्रीवृषभनाथतीर्थंकराय नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु-कुरु स्वाहा।।6।।

अ स ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदातप-विनाशनाय ह्रीं शान्तिनाथाय नमः सर्वशान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं शान्तिनाथाय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय म्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय चामरोज्ज्वल-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय चामरोज्ज्वल-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय र्‌म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय सिंहासन-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सिंहासन-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय भामण्डल-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय भामण्डल-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय इम्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय दुन्दुभि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दुन्दुभि-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय स्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय र्‌म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय प्रातिहार्याष्ट-सहिताय बीजाष्ट मण्डन-मण्डिताय सर्वविघ्नशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।।16।।

तव भक्ति-प्रसादाल्लक्ष्मी-पुर-राज्यगेह-पदभ्रष्टोपद्रव-दारिद्रोद्भवोपद्रव-स्वचक्र-परचक्रोद्-भवोपद्रव-प्रचण्ड-पवनानल-जलोद्-भवोपद्रव-शाकिनी-डाकिनी-भूत-पिशाच-कृतोपद्रव-दुर्भिक्षव्यापार-वृद्धिरहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं सम्पूर्णकल्याण मंगलरूप-मोक्षपुरुषार्थश्च भवतु स्वाहा।।18।।

पुण्याहवाचन-1

ॐ पुण्याहं पुण्याहं लोकोद्योतनकरा अतीतकालसंजाता निर्वाणसागर-प्रभृत-यश्चतुर्विंशति-भूत-परमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।

ॐ सम्प्रतिकालसम्भवा वृषभादि वीरान्ताश्चतुर्विंशति-परमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।

ॐ भविष्यत्कालाभ्युदय-प्रभवा महापद्मादि-चतुर्विंशति-भविष्यत्परम देवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।

ॐ त्रिकालवर्ति-परमधर्माभ्युदयाः सीमन्धर-प्रभृतयो विदेह क्षेत्रगत विंशति-परमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।

ॐ वृषभसेनादिगणधरदेवाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।

ॐ सप्तर्द्धि-विशोभिताः कुन्दकुन्दाद्यनेक-दिगम्बरसाधुचरणाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।

इह वान्य-नगर-ग्राम-देवतामनुजाः सर्वे गुरु-भक्ता जिनधर्मपरायणा भवन्तु। दानतपोवीर्यानुष्ठानं नित्यमेवास्तु। सर्वजिनभक्तानां धनधान्यैश्वर्यवलद्युतियशः-प्रमोदोत्सवाः प्रवर्धन्ताम्। तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। वृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। अविघ्नमस्तु। आयुष्यमस्तु। आरोग्यमस्तु। कर्मसिद्धिरस्तु। इष्टसम्पत्तिरस्तु। काममाङ्गल्योत्सवाः सन्तु। पापानि शाम्यन्तु। घोराणि शाम्यन्तु। पुण्यं वर्धताम्। धर्मो वर्धताम्। श्रीर्वर्धताम्। कुलगोत्रे चाभिवर्धेताम्। स्वस्ति भद्रं चास्तु इवीं क्ष्वीं ह्रं सः स्वाहा। श्रीमज्जिनेन्द्र-चरणारविन्देष्वानन्द-भक्तिः सदाऽतु।

श्री सिद्ध अर्चा

समस्तघातिमर्दनं, सुरेन्द्रवृन्दमुज्ज्वलं।
नवीनमालतीदलैर्-, यजामि मुक्तिसिद्धये॥1॥
गुणाष्टकाद्यलंकृतं, समस्तसिद्धनायकम्।
नमेरुपारिजातकैर्-, यजामि मुक्तिसिद्धये॥2॥
अलंघ्यमुत्तमाधिपं, दयालुसूरिवृन्दकम्।
प्रफुल्लमल्लिपुष्पकैर्-, यजामि मुक्तिसिद्धये॥3॥
समस्त शास्त्रदेशकं, चरित्रपात्रदेशकम्।
विकासि केतकीदलैर्-, यजामि मुक्तिसिद्धये॥4॥
चिदर्थभावनापरं, सुसाधुसाधुवन्दकं।
सुवर्णवर्णचम्पकैर्-, यजामि मुक्तिसिद्धये॥5॥
धर्म सौख्यदायकं, अभीष्टफल प्रदायकं।
कनेर पुष्पसद्यकैर-, यजामि मुक्तिसिद्धये॥6॥
अरिष्ट कर्म नाशकम्-, ज्ञान विशद भाषकम्।
कदम्बकुन्द पुष्पकैर्-, यजामि मुक्तिसिद्धये॥7॥
जिनेन्द्र बिम्ब लायकं, विशिष्ट सिद्धिदायकम्।
गुलाब पद्म पुष्पकैर्-, यजामि मुक्तिसिद्धये॥8॥
'विशद' जैन मंदिरं-, मुक्ति निलय सुन्दरं।
मुनीन्द्र वृन्द्र सेवतैः-, यजामि मुक्तिसिद्धये॥9॥

भक्तामर महिमा

श्री भक्तामर का पाठ, कर्म का काठ जलावन कारी, भव व्याधी मैटनहारी।
अन्तर में मेरे मोह जगा, जन्मादि जरा का रोग लगा
न कोई हमको मिला, जगत उपकारी भव व्याधी मैटनहारी...1
भक्तामर भक्ति का कारण है, जो भव का रोग निवारण है
यह तीन लोक में गाया, मंगलकारी भव व्याधी मैटनहारी...2
श्री मानतुंग मुनिवर ज्ञानी, को कैद किए कुछ अज्ञानी
तब आदिनाथ को ध्याए, गुरु अनगारी भव व्याधी मैटनहारी...3
जो पाठ करे व्रत ध्यान करे, उसका संकट सब पूर्ण हरे
सुखशांति पाता है, पावन व्रतधारी भव व्याधी मैटनहारी...4
जो ''विशद'' ज्ञान का दाता है, जीवों को अभय प्रदाता है
शाश्वत मुक्ति का, हेतु है शुभकारी भव व्याधी मैटनहारी...5

श्री आदिनाथ स्तोत्र

ऋषभ जिनेन्द्र शतेन्द्र सुपूजित, अतिशय कारी पुण्य जगाए।
आदि जिनेश सुरेश कहे, सुर इन्द्र विशद जयकार लगाए॥
धर्म प्रवर्तन आप किए, षट् कर्मों का सन्देश सुनाए।
आदि प्रभो! जय आदि प्रभो!, ग्रह शांति करें गुरु दोष नशाए॥1॥
पुण्य सुयोग से पूरव भव में, वज्रजंघ चक्री पद पाए।
ऋद्धि धनी मुनि को प्रभु जी, वन में अतिशय आहार कराए॥
वानर सूकर शेर नकुल यह, अनुमोदन कर हर्ष मनाए।
आदि प्रभो!.....॥2॥
भोग भूमिज यह जीव बने सब, स्वर्ग लोक को आप सिधाए।
स्वर्गों के सुख भोग किए फिर, मर्त्य लोक में जन्म सुपाए॥
तीर्थेश बने वृषभेष सभी, पशु सुत बन के तिन गृह उपजाए।
आदि प्रभो!.....॥3॥
चक्री से मुनिराज बने फिर, सोलह कारण भाव विचारे।
कल्पातीत अतीत रहा प्रभु, सर्वार्थ सिद्धी में भव धारे॥
तेंतीस सागर आप रहे फिर, चयकर अंतिम गर्भ में आए।
आदि प्रभो!.....॥4॥
श्री गज बैल मृगेन्द्र रमा द्वय, माल दिवाकर चन्द्र प्रकाशी।
मीन कलश हृद सिन्धु सिंहासन, देव विमान फणीन्द्र निवासी॥
रत्न-राशि निर्धूम अग्नी शुभ, सोलह सपने मात को आए।
आदि प्रभो!.....॥5॥
नगर अयोध्या जन्म लिए तब, हस्ति सजा हँसते मुस्काए।
चाले सनसन, नाचे छमाछम, गद्गद् हो मद छोड़ के आए॥
भव्य महा अभिषेक किए सुर, महिमा को जिसकी कह पाए॥
आदि प्रभो!.....॥6॥
कंकण कुण्डल आदिक ले जिन, बालक को शचि ने पहनाए।
इन्द्र स्वय ही बालक बन प्रभु, के संग क्रीड़ा करने आए॥
युवराज बने, जिनराज महा, मण्डलेश्वर के पद को प्रभु पाए।
आदि प्रभो!.....॥7॥
यह संसार असार विचार, सुकेशलुंच कर संयम पाए।
भेद विज्ञान जगाए प्रभू! तब, छैः महिने का ध्यान लगाए॥
कर्म किए चउ घात विशद! फिर, पावन केवल ज्ञान जगाए।
आदि प्रभो!.....॥8॥
कर विहार दिग्देश देशान्तर, अष्टापद गिरि पे प्रभु आए।
योग निरोध किए चौदह दिन, कर्म अघाती आप नशाए॥
नित्य निरंजन ज्ञान शरीरी, सिद्ध शिला पे धाम बनाए।
आदि प्रभो!.....॥9॥

श्री भक्तामर विधान पूजा

स्थापना

दोहा- **आदिनाथ की भक्ति का, है पावन सोपान।**
भक्तामर स्तोत्र का, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

नीर क्षीर सा यहाँ चढ़ाएँ, भव रोगों से मुक्ती पाएँ।
भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सुरभित गंध बनाकर लाए, भव संताप पूर्णक्षय जाए।
भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत श्रेष्ठ धुवाकर लाए, अक्षय पद हमको मिल जाए।
भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित हम यह लाए, काम रोग हरने को आए।
भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ नैवेद्य बनाकर लाए, क्षुधा नाश मेरी हो जाए।
भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी यह दीप जलाए, मोह महातम मम् क्षय जाए।
भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में हम प्रजलाएँ, अष्टकर्म से मुक्ती पाएँ।
भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस चढ़ाते हैं फल भाई, जो हैं महा मोक्ष फलदायी।
भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य विशद हम यहाँ चढ़ाएँ, पद अनर्घ्य हम भी पा जाएँ।
भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- **पुष्प सुगन्धीवान, चढ़ा रहे हम भाव से।**
करते हैं गुणगान, मुक्ती पाने के लिए।।

शान्तये शांतिधारा...

सोरठा- **चढ़ा रहे यह नीर, प्रासुक है जो श्रेष्ठतम।**
मिट जाए भव पीर, काल अनादी जो विशद।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा- **अर्चा करने हम यहाँ, आज हुए बाचाल।**
भक्तामर स्तोत्र की, गाते हैं जयमाल।।

(नरेन्द्र छन्द)

आदि ब्रह्म आदीश्वर स्वामी, आदि सृष्टि के जो कर्ता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, मुक्ति वधू के जो भर्ता।।
नाभिराय सुत मरुदेवी के, भाग्य जगाए हे स्वामी!।
जन्म लिए प्रभु नगर अयोध्या, त्रिभुवन पति अन्तर्यामी।।1।।
धर्म प्रवर्तन करने वाले, हे षट् कर्मों के दाता।
मोक्ष मार्ग के उपदेष्टा प्रभु, जन जन के तुम हो त्राता।।
महिमा का ना पार आपकी, सुर नर मुनि यह गाते हैं।
भव्य जीव प्रभु भक्ती का फल, अनायास ही पाते हैं।।2।।
मानतुंग मुनिवर को राजा, कारागृह में जब डाले।
भक्तामर के अतिशय से तब, टूटे अड़तालिस ताले।।
पाठ रचाकर भक्तामर का, मुनिवर जी जयवंत हुए।
भक्तों के भक्तामर पढ़के, रोग शोक दुख अंत हुए।।3।।

आदिनाथ स्तोत्र मूलतः, भक्तामर यह कहलाए।
मानतुंग मुनिवर भक्ती कर, आदिनाथ जिनको ध्याए॥
अक्षर प्रथम स्तोत्रता है, भक्तामर अतएव कहा।
भक्ती की महिमा दर्शायक, पावन यह स्तोत्र रहा॥4॥

दोहा- **सुख शांति सौभाग्य हो, पढ़कर यह स्तोत्र।**
मुक्ती पद का मूलतः, रहा विशद सो स्रोत॥

ॐ ह्रीं धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **ऋषभदेव के भक्त बन, मानतुंग मुनिराज।**
भक्तामर रचना किए, पूजें जिन पद आज॥

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

बीस विदेहों में रहें, विहरमान तीर्थेश।
भाव सहित हम पूजते, लेकर अर्घ्य विशेष॥4॥

ॐ ह्रीं विरहमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म को नाशकर, के होते हैं सिद्ध।
पूज रहे हम भाव से, जो है जगत् प्रसिद्ध॥5॥

ॐ ह्रीं अनन्तानन्तसिद्धेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में जो रे, तीर्थ क्षेत्र निर्माण।
जिनक अर्चा भाव से, करते यहाँ महान॥6॥

ॐ ह्रीं निर्वाण क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्तामर स्तोत्र-प्रत्येकार्घ्य

मूल रचयिता-आचार्य श्री मानतुंग जी
(पद्यानुवाद श्री विशदसागर जी)

दोहा

वृषभनाथ वृषभेन जिन, हो वृष के अवतार।
तारण तरण जहाज तव, करो 'विशद' भवपार॥

(इति मण्डलस्योपरिपुष्पांजलि क्षिपेत्)

(बसन्त तिलका छन्द)

भक्तामर - प्रणत मौलि - मणि - प्रभाणा-
मुद्योतकम् - दलित - पाप - तमो वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य - जिन - पाद - युगं - युगादा-
वालम्बनं - भवजले - पततां - जनानाम्॥1॥

चौपाई

भक्त अमर नत मुकुट छवि देय, गहन पाप तम को हर लेय।
भव सर पतित को शरण विशाल, 'विशद' नमन जिन पद नत भाल॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यः संस्तुतः सकल - वाङ्मय - तत्त्व - बोधा-
दुद्भूत - बुद्धि - पटुभिः सुर - लोक - नाथैः।
स्तोत्रै र्जगत् - त्रितय - चित्त - हरै - रुदारैः
स्तोष्ये किलाह - मपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्॥2॥

द्वादशांग ज्ञाता सुर देव, जिनवर की करते नित सेव।
शब्द अर्थ पद छन्द बनाय, थुति करता हूँ मैं सिरनाय॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चित - पाद - पीठ,
स्तोतुं समुद्यत - मति - र्विगत - त्रपोऽहम्।
बालं विहाय जल - संस्थित - मिन्दु - बिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम॥3॥

मंद बुद्धि हूँ अति अज्ञान, करता हूँ प्रभु का गुणगान।
जल में चन्द्र बिम्ब को पाय, बालक मन को ही ललचाय॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्तुं गुणान् गुण - समुद्र! शशांक - कान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरु - प्रतिमोऽपि बुद्धया।
कल्पान्त - काल - पवनोद्धत - नक्र - चक्रं
को वा तरीतु - मल - मम्बु - निधिं भुजाभ्याम्॥4॥

गुणसागर प्रभु गुण की खान, सुर गुरु न कर सके बखान।
क्षुब्ध जंतु युत प्रलय अपार, सागर तैर करे को पार॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोऽहं तथापि तव भक्ति - वशान्मुनीश!
कर्तुं स्तवं विगत - शक्ति - रपि प्रवृत्तः।
प्रीत्याऽत्म - वीर्य - मवि - चार्य मृगी मृगेन्द्रं
नाभ्येति किं निज - शिशोः परि - पाल - नार्थम्॥5॥

फिर भी 'विशद' भक्ति उर लाय, शक्ति हीन थुति करूँ बनाय।
हिरण शक्ति क्या छोड़े न जाय, मृग पति ढिग निज शिशु न बचाय॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अल्पश्रुतं श्रुत - वतां परि - हास - धाम,
त्वद् - भक्ति - रेव मुखरी - कुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किल - मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र - चारु - कलिका - निक - रैक - हेतु॥6॥

मैं अल्पज्ञ हास्य को पात्रा, भक्ति हेतु है पुलकित गात।
आम्रकली लख ऋतु बसंत, कोयल कुहुके कर पुलकंत॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्वत्संस्तवेन भव - सन्तति सन्निबद्धं,
पापं क्षणात् - क्षय - मुपैति शरीर - भाजाम्।
आक्रान्त - लोक - मलि - नील - मशेष - माशु,
सूर्यांशु - भिन्न - मिव शार्वर - मन्ध - कारम्॥7॥

पाप कर्म होता निर्मूल, तव थुति जो करता अनुकूल।
सघन तिमिर ज्यों रवि को पाय, क्षण में शीघ्र नष्ट हो जाय॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनु - धियाऽपि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी - दलेषु
मुक्ता - फल - द्युति - मुपैति ननूद - बिन्दुः॥8॥

थुति करता हूँ मैं मति मंद, मन हरता मन्त्रों का छंद।
कमल पत्र पर जल कण जाय, ज्यों मुक्ता की शोभा पाय॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदानुसारिणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **आदिनाथ की अर्चना, करते मंगलकार।**
भाव विशुद्धी के लिए, वन्दन बारम्बार॥

ॐ ह्रीं अष्टदल कमलाधिपतये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आस्तां तव स्तवन - मस्त - समस्त - दोषं,
त्वत् - संकथाऽपि जगतां दुरि - तानि हन्ति।
दूरे सहस्त्र - किरणः कुरुते प्रभैव,
पद्मा - करेषु जलजानि विकास - भाञ्जि॥9॥

तव संस्तुति की कथा विशाल, नाम काटता कर्म कराल।
दिनकर रहे बहुत ही दूर, कमल खिलाता सर में पूर॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिन्नसोदारणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नात्यद् - भुतं भुवन - भूषण भूतनाथ!,
भूतै - र्गुणै - र्भुवि भवन्त - मभिष्टु - वन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्या - श्रितं य इह नात्म समं करोति॥10॥

भवि थुतिकर तुम सम हो जाय, या में क्या अचरज कहलाय?
आश्रित करें न आप समान, ऐसे प्रभु का क्या सम्मान?॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धीणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्ट्वा भवन्त - मनि - मेष - विलोक - नीयम्,
नान्यत्र तोष - मुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकर - द्युति - दुग्ध - सिन्धोः
क्षारं जलं जल - निधे - रसितुं क इच्छेत्॥11॥

नयन आपके तन को देख, और नहीं फिर लगते नेक।
क्षीर नीर जो करता पान, क्षार नीर क्यों करे पुमान?॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धीणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यैः शान्त - राग - रुचिभिः परमाणु - भिस्त्वं,
निर्मापितस् - त्रिभुवनैक - ललामभूत!।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्याम्,
यत्ते समान - मपरं न हि रूप - मस्ति॥12॥

प्रभु तुम शांत मनोहर रूप, परमाणु सम्पूर्ण अनूप।
तुम सा नहीं है जग में कोय, दर्शन की अभिलाषा होय॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धीणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्त्रं क्व ते सुर - नरो - रग - नेत्र - हारि,
निःशेष - निर्जित - जगत् - त्रितयोप - मानम्।
बिम्बं कङ्लक - मलिनं क्व निशा - करस्य,
यद् - वासरे भवति पाण्डु - पलाश - कल्पम्॥13॥

तव अनुपम मुख है भगवान, निरुपम है अति शोभामान।
चन्द्रकांति दिन में छिप जाय, तब मुख शोभा निशदिन पाय॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण - मण्डल - शशाङ्क - कला - कलाप,
शुभ्रा गुणास् - त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति।
ये संश्रितास् - त्रिजग - दीश्वर नाथ - मेकम्,
कस्तान् निवार - यति संचरतो यथेष्टम्॥14॥

'विशद' गुणों के प्रभु भण्डार, तीन लोक को करते पार।
एक नाथ हो आश्रयवान, उन विचरण को रोके आन॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्ग - नाभिर्
नीतं मनागपि मनो न विकार - मार्गम्।
कल्पान्त - काल - मरुता चलिता - चलेन,
किं मन्दराद्रि - शिखरं चलितं कदाचित्॥15॥

अचल चलावें प्रलय समीर, मेरु न हिलता हो अतिधीर।
सुर तिय न कर सके विकार, मन प्रभु का स्थिर अविकार॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्धूम - वर्ति - रप - वर्जित - तैल - पूरः
कृत्स्नं जगत् - त्रय - मिदं प्रकटी - करोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिता - चलानाम्,
दीपोऽपरस्त्व - मसि नाथ! जगत् - प्रकाशः॥16॥

जले तेल बाती बिन श्वाँस, त्रिभुवन का प्रभु करें प्रकाश।
दीप धूप बिन जलता जाय, तूफाँ उसको बुझा न पाय॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नास्तं कदाचि - दुप - यासि न राहु - गम्यः,
स्पष्टी - करोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भो - धरो - दर - निरुद्ध महा - प्रभावः
सूर्याति - शायि - महि - मासि मुनीन्द्र! लोके॥17॥

ग्रसे राहु न होते अस्त, प्रभु जी रवि से अधिक प्रशस्त।
मेघ ढकें न अती प्रकाश, ज्ञान भानु हो अद्भुत खास॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंग महाणिमित्त कुसलाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्यो - दयं दलित - मोह - महान्धकारं,
गम्यं न राहु - वदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज - मनल्प - कान्ति,
विद्यो - तयज् - जग - दपूर्व - शशाङ्क - बिम्बम्॥18॥

उदित नित्य मुख जो तमहार, मेघ राहु से है विनिवार।
सौम्य मुखाम्बुज चन्द्र समान, लोक प्रकाशी कांति? महान॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्व इट्डिपत्ताणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किं शर्वरीषु शशि - नाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन् - मुखेन्दु - दलितेषु तमःसु नाथ!।
निष्पन्न - शालि - वन - शालिनि जीव - लोके,
कार्यं कियज् - जलधरै - र्जलभार - नम्रै:।19॥

तमहर तव मुख चन्द्र महान, कहाँ करे निशदिन शशिभान।
खेत में ज्यों पक जाये धान, जलधर वर्षा है निष्काम॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृताव - काशं,
नैवं तथा हरि - हरादिषु नायकेषु।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काच - शकले किरणा - कुलेऽपि॥20॥

शोभे ज्ञान तुम्हारे पास, हरि हर में न उसका वास।
कांति महामणि में जो होय, कम्ब में होती क्या वह सोय?॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन्ये वरं हरि - हरादय एवं दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोष - मेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन् मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि॥21॥

देखे हरि हरादि कई देव, तुम से आज मिले जिनदेव।
श्रद्धा हृदय जगी तव पाय, अन्य देव अब नहीं सुहाय॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्ण समणाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्व - दुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र - रश्मिम्,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुर - दंशु - जालम्॥22॥

सतनारी सत सुत उपजाय, तुम समान कोई न पाय।
रवि का पूरब में अवतार, तारागण के कई आधार॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगास गामीणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्वा - मामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य - वर्ण - ममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वा - मेव सम्य - गुप - लभ्य जयन्ति मृत्युम्,
नान्यः शिवः शिव - पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः॥23॥

तुमको परम पुरुष मुनि माने, तमहर अमल सूर्यसम जाने।
मृत्युंजय हो प्रभु को पाय, शरण छोड़ जन जगत भ्रमाय॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्वा-मव्ययं विभु - मचिन्त्य - मसंख्य - माद्यं,
ब्रह्माणमीश्वर - मनन्त - मनङ्ग - केतुम्।
योगीश्वरं विदित - योग - मनेक - मेकं
ज्ञान - स्वरूप - ममलं प्रवदन्ति सन्तः॥24॥

भोगाव्यय असंख्य विभु ईश्वर, अचिन्त्य आद्य ब्रह्मा योगीश्वर।
अनेक ज्ञानमय अमल अनंत, कामकेतु इक कहते संत॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठि विसाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **आदिम तीर्थंकर हुए, आदिनाथ जिननाथ।**
करके जिनकी अर्चना, चरण झुकाते माथ॥

ॐ ह्रीं षोडश दल कमलाधिपतये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धस्त्व - मेव विबुधार्चित - बुद्धि - बोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवन - त्रय - शङ्करत्वात्।
धाताऽसि धीर! शिव - मार्ग विधे - र्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि॥25॥

बुध विबुधार्चित बुद्ध महान, शंकर सुखकारी भगवान।
ब्रह्मा शिवपथ दाता नाथ!, सर्वश्रेष्ठ पुरुषोत्तम साथ॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुभ्यं नमस् - त्रिभुव - नार्ति - हराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षिति - तलामल - भूषणाय।
तुभ्यं नमस् - त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि - शोषणाय॥26॥

त्रिभुवन दुखहर तुम्हें प्रणाम!, भूतल भूषण तुम्हें प्रणाम!।
त्रिभुवन स्वामी तुम्हें प्रणाम!, भवसर शोषक तुम्हें प्रणाम!।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणै - रशेषै,
स्त्वं संश्रितो निरवकाश - तया मुनीश!
दोषै - रुपात्त - विविधाश्रय - जात - गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिद -पीक्षितोऽसि।।27।।

शरण में आये सब गुण आन, विस्मय क्या कोइ मिला न थान?
मुख न देखें स्वप्न में दोष, सारे जग में प्रभु निर्दोष।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त तवाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्चै - रशोक - तरु - संश्रित - मुन्मयूख
माभाति रूप - ममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत् - किरण - मस्त - तमो - वितानं,
बिम्बं रवे - रिव पयोधर - पार्श्व - वर्ति।।28।।

तरु अशोक तल में भगवान, उज्ज्वल तन अति शोभामान।
मेघ निकट दिनकर के होय, उस भांति दिखते प्रभु सोय।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहासने मणि - मयूख - शिखा - विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद् - विलस - दंशुलता - वितानम्,
तुंगो-दयाद्रि-शिर-सीव सहस्त्र-रश्मेः।।29।।

मणिमय सिंहासन पर देव, तव तन शोभे स्वर्णिम एव।
रवि का उदयाचल पर रूप, उदित सूर्य सम दिखे स्वरूप।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्दावदात - चल - चामर - चारु - शोभम्,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत - कान्तम्।
उद्यच्छशांक - शुचि - निर्झर - वारिधार,
मुच्चैस्तटं - सुरगिरे - रिव शात - कौम्भम्।।30।।

ढुरते चामर शुक्ल विशेष, स्वर्णिम शोभित है तव भेष।
ज्यों मेरू पर बहती धार, स्वर्णमयी पर्वत मनहार।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्र - त्रयं तव विभाति शशाङ्क - कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित - भानुकर - प्रतापम्।
मुक्ताफल - प्रकर - जाल - विवृद्ध - शोभम्,
प्रख्या - पयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्।।31।।

तीन छत्र तिय लोक समान, मणिमय शशि सम शोभावान।
सूर्य ताप का करे विनाश, श्री जिन के गुण करें प्रकाश।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुण परक्कमाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गम्भीर - तार - रव - पूरित - दिग्विभागस्
त्रैलोक्य - लोक - शुभ - सङ्गम - भूति - दक्षः।
सद् - धर्मराज - जय - घोषण - घोषकः सन्,
खे दुन्दुभि - र्ध्वनति ते यशसः प्रवादी।।32।।

दश दिशि ध्वनि गूँजें गम्भीर, जय घोषक जिनवर की धीर।
तीन लोक में अति सुखदाय, सुयश दुन्दुभि बाजा गाय।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुण बंभचारीणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन्दार - सुन्दर - नमेरु - सुपारि - जात
सन्तान - कादि - कुसुमोत्कर - वृष्टि - रुद्घा।
गन्धोद - बिन्दु - शुभ - मन्द - मरुत् - प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा।।33।।

मंद मरुत गंधोदक सार, सुरगुरु सुमन अनेक प्रकार।
दिव्य वचन श्री मुख से खिरें, पुष्प वृष्टि नभ से ज्यों झरें।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमोसहि पत्ताणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुम्भत् - प्रभा - वलय - भूरि - विभा - विभोस्ते,
लोक - त्रये द्युतिमतां द्युति - माक्षिपन्ती।
प्रोद्यद् - दिवाकर - निरन्तर - भूरि - संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशा-मपि सोम-सौम्याम्।।34।।

त्रिजग कांति फीकी पड़ जाय, भामण्डल की शोभा पाय।
चन्द्र कांति सम शीतल होय, सारे जग का आतप खोय॥34॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहि पत्ताणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्गा - पवर्ग - गम - मार्ग - विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म - तत्त्व - कथनैक - पटुस् त्रिलोक्याः।
दिव्यध्वनि - र्भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा - स्वभाव - परिणाम - गुणैः प्रयोज्यः॥35॥

स्वर्ग मोक्ष की राह दिखाय, द्रव्य तत्त्व गुण को प्रगटाय।
दिव्य ध्वनि है 'विशद' अनूप, ॐकार सब भाषा रूप॥35॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उन्निद्र - हेमनव - पङ्कज - पुञ्ज - कान्ति,
पर्युल्लसन् नख मयूख शिखाभि रामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परि कल्प यन्ति॥36॥

भवि जीवों का हो उपकार, प्रभु इच्छा बिन करें विहार।
जहँ जहँ प्रभु के पग पड़ जायँ, तहँ तहँ पंकज देव रचायँ॥36॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्थं यथा तव विभूति रभूज् जिनेन्द्र!
धर्मोप देशन विधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रह गणस्य विकाशिनोऽपि॥37॥

धर्म कथन में आप समान, अन्य देव न पाते आन।
तारा रवि की द्युति क्या पाय? वैभव देव न अन्य लहाय॥37॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्च्योतन् - मदाविल - विलोल - कपोल - मूल-
मत्त - भ्रमद् - भ्रमर - नादविवृद्ध - कोपम्।
ऐरावताभ मिभ मुद्धत मा पतन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भव दाश्रितानाम्॥38॥

गण्डस्थल मद जल से सने, गीत गूँजते अतिशय घने।
मत्त कुपित होकर गज आय, फिर भी भक्त नहीं भय खाय॥38॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भिन्नेभ - कुम्भ - गल - दुज्ज्वल - शोणितक्त,
मुक्ताफल प्रकर भूषित भूमिभागः।
बद्ध - क्रमः क्रम गतं हरिणा धिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम - युगा - चल - संश्रितं ते॥39॥

भिदें कुम्भ गज मुक्ता द्वारा, हो भूषित भू भाग ही सारा।
तव भक्तों का केहरि आन, न कर सके जरा भी हान॥39॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बचिबलीणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पान्त - काल - पवनोद्धत - वह्नि- कल्पम्,
दावानलं ज्वलित मुज्ज्वल मुत्स्फुलिङ्गम्।
विश्वं जिघत्सु मिव सम्मुख मापतन्तं,
त्वन्नाम कीर्तन जलं शमयत्यशेषम्॥40॥

प्रलय पवन अग्नी घन-घोर, उठें तिलंगे चारों ओर।
जग भक्षण हेतू आक्रान्त, नाम रूप जल से हो शांत॥40॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्तेक्षणं समद कोकिल कण्ठ नीलं,
क्रोधोद्धतं फणिन मुत्फण मापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्त शङ्कस्-
त्वन्नाम-नाग-दमनी-हृदि यस्य पुंसः॥41॥

काला नाग कुपित हो जाय, तो भी निर्भयता को पाय।
हाथ में नाग दमन ज्यों पाय, भक्त आपका बढ़ता जाय॥41॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीर सवीणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वल्गत्तुरंग गज गर्जित भीमनाद-,
माजौ बलं बलवता मपि भूपतीनाम्।
उद्यद् दिवाकर मयूख शिखा पविद्धं,
त्वत् - कीर्तनात्तम इवाशु भिदा - मुपैति॥42॥

हय गय भयकारी रव होय, शक्तीशाली नृप दल सोय।
नाश होय कर प्रभु यशगान, रवि ज्यों करे तिमिर की हान।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्ताग्र - भिन्न - गज - शोणित - वारि - वाह-
वेगा - वतार - तरणा - तुर - योध - भीमे।
युद्धे जयं विजित दुर्जय जेय पक्षास्-
त्वत्पाद पङ्कज -वना -श्रयिणो लभन्ते।।43।।

भाला गज के सिर लग जाय, सिर से रक्त की धार बहाय।
रण में दास विजय तव पाय, दुर्जन शत्रु भी आ जाय।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अम्भो - निधौ क्षुभित - भीषण - नक्र - चक्र-
पाठीन - पीठ - भय - दोल्वण - वाड - वाग्नौ।
रङ्ग - तरङ्ग - शिखर स्थित - यान - पात्रास्-
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति।।44।।

क्षुब्ध जलधि बड़वानल होय, मकरादिक भयकारी सोय।
करें आपका जो भी ध्यान, पार करें निर्भय हो थान।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमिय सवीणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उद्भूत - भीषण - जलोदर - भार - भुग्नाः,
शोच्यां दशा - मुप - गताश्च्युत - जीवि - ताशाः।
त्वत् - पाद - पंकज - रजोऽमृत - दिग्ध - देहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज - तुल्य - रूपाः।।45।।

रोग जलोदर होवे खास, चिन्तित दशा तजी हो आस।
अमृत प्रभु पद रज सिर नाय, मदन रूपता को वह पाय।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आपादकण्ठ - मुरु - शृङ्खल - वेष्टिताङ्गा,
गाढ़ं बृह्न- निगड - कोटि - निघृष्ट - जङ्घाः।
त्वन् - नाम - मन्त्र - मनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगत - बन्ध - भया भवन्ति।।46।।

सांकल से हो बद्ध शरीर, खून से लथपत होवे पीर।
नाम मंत्र तव जपते लोग, शीघ्र बंध का होय वियोग।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मत्त - द्विपेन्द्र - मृगराज - दवानलाहि-
संग्राम - वारिधि - महोदर - बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाश - मुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तव - मिमं मतिमानधीते।।47।।

गज अहि दव रण बंधन रोग, मृग भय सिंधू का संयोग।
सारे भय भी हों भयभीत, थुति प्रभु की जो करें विनीत।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धयदणाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तो - त्रस्रजं तव जिनेन्द्र! गुणै र्निबद्धां,
भक्त्या मया विविध - वर्ण - विचित्र - पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठ - गता - मजस्रं,
तं ''मानतुङ्ग'' - मवशा समुपैति लक्ष्मीः।।48।।

विविध पुष्प जिनगुण की माल, प्रभु की संस्तुति रची विशाल।
कंठ में धारण जो कर लेय, मानतुंग सम लक्ष्मी सेय।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो लोए सव्वसाहूणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **मानतुंग की कृती का, भाषामय अनुवाद।**
'विशद' शांति आनन्द का, भोग करे कर याद।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति दल कमलाधिपतये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य-ॐ ह्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः।

जयमाला

दोहा- भक्ती कर जग जीव सब, होते विशद निहाल।
भक्तामर से भक्तिकर, गाते है जयमाल॥

(शम्भू छन्द)

जय जयति जयो जय तीर्थंकर, जय जयति जयो जय ज्ञान धनी।
जय जयति जयो जय ऋषभदेव, जय जयति जयो जय सर्व गुणी॥
जय जयति जयो जय भक्तामर, जय जयति जयो जय मुनि ज्ञानी।
जय जयति जयो जय जैन धर्म, जय जयति जयो जय जिनवाणी॥
राजा मुनिवर जी मांनतुंग, को कारागृह में डाले थे।
तब भक्तामर की भक्ती से, वे टूट गये सब ताले थे॥
राजा ने मुनिवर मानतुंग, जिनधर्म का जय जयकार किया।
चरणों में गिरकर के मुनि का, राजा ने आशीर्वाद लिया॥
जो भव बन्धन हरणे वाले, उनको बन्धन में डाल दिया।
पर कारागृह में रहकर भी, गुरुवर ने विशद कमाल किया॥
मुनि मानतुंग से क्षमा मांग, जिन मत सबने स्वीकार किया।
मुनिवर ने क्षमादान दे कर, भक्तामर का उपहार दिया॥
प्रभु आदिनाथ की अनुकम्पा, श्री मानतुंग मुनिवर पाए।
हे आदिनाथ! हे महा श्रमण!, अनुकम्पा हम पाने आए॥
हे जग उद्धारक तीर्थंकर!, मुझको भी भव से पार करो।
दे करके करुणा दान विशद, हम भक्तों का उद्धार करो॥

दोहा- **भक्तामर के सृजक हैं, मानतुंग ऋषिराज।**
जिन गुरु की अर्चा विशद, करते हैं हम आज॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त सर्व लोकोत्तम जगत शरण श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **शांति रूप जिन पर परम, शांती के दातार।**
पुष्पांजलि करते चरण, हे जिनेन्द्र! दुखहार॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

ऋद्धि अर्घ

1. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं झौं झौं नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं झौं झौं नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं झौं झौं नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं झौं झौं नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं झौं झौं नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं झौं झौं नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं झौं झौं नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादाणुसारिणं झौं झौं नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिन्नसोदाराणं झौं झौं नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धीणं झौं झौं नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धीणं झौं झौं नमः।
12. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धाणं झौं झौं नमः।
13 ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं झौं झौं नमः।
14. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउल मदीणं झौं झौं नमः।
15. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दस पुव्वीणं झौं झौं नमः।
16. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदस पुव्वीणं झौं झौं नमः।
17. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठांगमहा णिमित कुसलाणं झौं झौं नमः।
18. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउयव्वइड्ढि पत्ताणं झौं झौं नमः।
19. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं झौं झौं नमः।
20. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं झौं झौं नमः।
21. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं झौं झौं नमः।
22. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामिणं झौं झौं नमः।
23 ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं झौं झौं नमः।
24. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं झौं झौं नमः।
25. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं झौं झौं नमः।
26. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं झौं झौं नमः।
27. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं झौं झौं नमः।
28. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं झौं झौं नमः।
29. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं झौं झौं नमः।
30. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं झौं झौं नमः।
31. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणपरक्कमाणं झौं झौं नमः।
32. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरबंभचारिणं झौं झौं नमः।
33 ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं झौं झौं नमः।
34. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिल्लोसहिपत्ताणं झौं झौं नमः।
35. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं झौं झौं नमः।
36. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं झौं झौं नमः।
37. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं झौं झौं नमः।
38. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणोबलीणं झौं झौं नमः।
39. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचनबलीणं झौं झौं नमः।
40. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं झौं झौं नमः।
41. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं झौं झौं नमः।
42. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं झौं झौं नमः।
43 ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवाणं झौं झौं नमः।
44. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवाणं झौं झौं नमः।
45. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं झौं झौं नमः।
46. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बड्ढ माणाणं झौं झौं नमः।
47. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायदणाणं झौं झौं नमः।
48. ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो-महदि-महावीर वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो (चेदि) झौं झौं नमः।

जापः ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हम् श्रीवृषभनाथतीर्थंकराय नमः।

श्री भक्तामर चालीसा

दोहा– भक्तामर स्तोत्र यह, आदिनाथ के नाम।
मानतुंग मुनि ने लिखा, करके चरण प्रणाम॥
सुख शांति सौभाग्य हो, पढ़ने से स्तोत्र।
बाधाएँ सब दूर हों, बहे धर्म का स्रोत॥

चौपाई

भक्तामर स्तोत्र निराला, सब कष्टों को हरने वाला॥1॥
आदिनाथ को मन से ध्याए, सच्चे मन से ध्यान लगाए॥2॥
भक्ती के रस में खो जाए, पढ़ने वाला पुण्य कमाए॥3॥
मानतुंग की रचना प्यारी, कहलाए जो संकटहारी॥4॥
पढ़े पढ़ाये पाठ कराये, प्राणी पुण्यवान हो जाए॥5॥
ग्रह क्लेश सारा नश जाए, मन में अनुपम शांती पाए॥6॥
हरेक काव्य है महिमाशाली, भक्ती कभी न जाए खाली॥7॥
एक एक अक्षर मंत्र कहाये, पाठक सुख सम्पत्ति पाए॥8॥
सदी ग्यारहवी जानो भाई, उज्जैनी नगरी सुखदायी॥9॥
जिसका प्रान्त मालवा गाया, विद्वानों का केन्द्र बताया॥10॥
राजाभोज वहाँ का जानो, नौ मंत्री जिसके पहिचानो॥11॥
कालीदास प्रथम कहलाया, सेठ सुदत्त वहाँ जब आया॥12॥
पुत्र मनोहर जिसका जानो, पुस्तक हाथ लिए था मानो॥13॥
राजा ने पूछा हे भाई, पुस्तक कौन सी तुमने पाई॥14॥
नाम माला तब नाम बताए, लेखक कवि धनंजय गाए॥15॥
कवि को राजा ने बुलवाया, खुश होके सम्मान कराया॥16॥
कृति नाम माला है प्यारी, राजा किए प्रशंसा भारी॥17॥
गुरु के आशिष से यह पाया, मानतुंग को गुरु बतलाया॥18॥
कालीदास को नहीं सुहाया, कविवर को मूरख बतलाया॥19॥
शास्त्रार्थ कर ले तो जानें, हम इसकी महिमा पहिचानें॥20॥
दूत मुनि के पास भिजाया, मुनिवर को संदेश सुनाया॥21॥
सभा बीच मुनिवर न आए, चार बार संदेश भिजाए॥22॥
कालिदास को गुस्सा आया, उसने राजा को भड़काया॥23॥

क्रोध नृपति के मन में आया, सैनिक को आदेश सुनाया॥24॥
बन्दी बना यहाँ पर लाओ, राजसभा में पेश कराओ॥25॥
दूत उठाकर मुनि को लाए, मुनि उपसर्ग मानकर आए॥26॥
मौन धार लीन्हे तब स्वामी, जैन धर्म के शुभ अनुगामी॥27॥
मुनिवर को वह कैद कराए, अड़तालिस ताले लगवाए॥28॥
नर नारी तब शोक मनाए, दुख के आँसू खूब बहाए॥29॥
मुनिवर मन में समता लाए, तीन दिनों का समय बिताए॥30॥
आदिनाथ को मुनिवर ध्याये, भक्तामर स्तोत्र रचाये॥31॥
मुनि के तन में बंधने वाले, टूट गयीं जंजीरे ताले॥32॥
आपों आप खुले सब द्वारे, द्वारपाल सब लगा के हारे॥33॥
पास में राजा के वह आए, जाकर सारा हाल सुनाए॥34॥
राजा तभी वहाँ पर आया, मुनिवर को फिर कैद कराया॥35॥
मुनिवर जी फिर ध्यान लगाए, ताले फिर से टूटे पाए॥36॥
राजा तब मन में घबराया, कालिदास को पास बुलाया॥37॥
कालिदास ने शक्ति लगाई, देवी कालिका भी प्रगटाई॥38॥
देवी चक्रेश्वरी तब आई, देख कालिका तब घबराई॥39॥
महिमा जैन धर्म की गाई, सबने तब जयकार लगाई॥40॥
जैन धर्म लोगों ने धारा, धर्म का है बश यही सहारा॥41॥
"विशद" भक्ति की है बलिहारी, पुण्यवान होवे शुभकारी॥42॥
भाव सहित भक्तामर गाएँ, मानतुंग सम भक्ति जगाएँ॥43॥
अतिशयकारी पुण्य कमाएँ, अनुक्रम से फिर मुक्ती पाएँ॥44॥
भक्तामर है महिमा शाली, भक्ती भक्त की जाय न खाली॥45॥
कोई पूजनपाठ रचाते, अखण्ड पाठ करते करवाते॥46॥
कोई विधान करके हर्षाते, कोई प्रभु की महिमा गाते॥47॥
हम भी श्री जिनवर को ध्याएँ पद में सादर शीश झुकाएँ॥48॥

(दोहा)

भक्तामर स्तोत्र से, भारी अतिशय होय।
नाना भाषा में रचा, पढ़े भाव से कोय॥
आधि व्याधि नाशक कहा, चालीसा स्तोत्र।
मंत्रो से परिपूर्ण है, 'विशद' धर्म का स्रोत॥

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐम् अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः।

आरती भक्तामर की

तर्ज–माई रे माई मुंडेर...

गाएँ जी गाएँ भक्तामर की, आरती मंगल गाएँ।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।
जिनवर के चरणों में नमन् प्रभुवर के चरणों में नमन्। टेक॥
कृत युग के आदी में प्रभु जी, स्वर्ग से चयकर आए।
नाभिराय अरु मरुदेवी का, जीवन धन्य बनाए॥
नगर अयोध्या जन्म लिए प्रभु, नर नारी हर्षाए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ॥
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन् ॥1॥
असि मसि कृषि वाणिज्य कला अरु, शिल्प का ज्ञान सिखाए।
नील परी की मृत्यु लखकर, प्रभु वैराग्य जगाए॥
विशद ज्ञान को पाए प्रभु जी, घाती कर्म नशाए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ॥
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्॥2॥
मानतुंग स्वामी के ऊपर, उपसर्ग भोज ने ढाया।
अड़तालिस तालों के अन्दर, मुनि को कैद कराया॥
टूट गईं जंजीरें ताले, आदि प्रभु को ध्याए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ॥
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्॥3॥
अतिशय देखा भोजराज ने, मुनि को शीश झुकाया।
जैन धर्म के जयकारों से, सारा गगन गुंजाया॥
आदिनाथ प्रभु का आराधन, भव से मुक्ति दिलाए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ॥
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्॥4॥
कोड़ा-कोड़ी वर्ष बाद भी, प्राणी तुमको ध्याते।
आदिनाथ जिन भक्तामर को, सादर शीश झुकाते॥
''विशद'' भक्ति की महिमा को यह, सारा ही जग गाए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ॥
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्॥5॥

कल्याण मन्दिर स्तोत्र पूजा

स्थापना

कुमुद चन्द्र आचार्य प्रवर जी, किए पार्श्व जिन का गुणगान।
हुआ प्रसिद्ध लोक में पावन, कल्याण मंदिर स्तोत्र महान॥
जिनकी अर्चा करने को हम, करते यह स्तोत्र विधान।
हृदय कमल में पार्श्व प्रभु का, विशद भाव से है आह्वान॥

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्र व्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

भोगों में लीन रहे प्रभुवर, इसमें ही सदा लुभाए हैं।
भौतिक पदार्थ में सुख माना, वह पाकर के हर्षाए हैं॥
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्व. स्वाहा।

सन्तप्त हृदय मेरा प्रभुवर, चन्दन से ना शीतल होता।
हम नित्य कषाएँ करते हैं, पछताते और जीवन खोता॥
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

प्रभु बाह्याभ्यान्तर शुद्ध रहे, अक्षत सम गुण प्रभु तेरे हैं।
हम भटक रहे चारों गति में, ना मिटे जगत के फेरे हैं॥
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

उपवन के पुष्प रहे अनुपम, ना पुष्प आप सा कोई है।
अफसोस है ज्ञानी यह आतम, फिर भी अनादि से सोई है॥
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नाना व्यंजन खाये हमने, फिर भी मन में ना शांति हुई।
चेतन को भोजन दिया नहीं, जिससे जीवन में भ्रान्ति हुई॥
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीपक जग का तम खोता है, आतम का तम ना मिटता है।
अन्तर में जले ज्ञान दीपक, कर्मों का राजा पिटता है॥
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्मों की धूप सताती है, हे नाथ! कर्म वसु जल जाएँ।
हम धूप जलाते अग्नि में, तव गुण प्रभु छाया पाएँ॥
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्व. स्वाहा।

आँधी कर्मों की चले विशद, पुरुषार्थ हीन हो जाता है।
जो ध्यान करे निज आतम का, वह मोक्ष महाफल पाता है॥
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्व. स्वाहा।

पथ मिले हमें बाधाओं के, अब दूर करें वे बाधाएँ।
जग की उलझन रहे, सब छोड़ विशद मुक्ती पाएँ॥
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं॥9॥

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **कल्याण मन्दिर स्तोत्र का, किया यहाँ गुणगान।**
यही भावना है विशद, पाएँ शिव सोपान॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

दोहा- **पार्श्वनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।**
भक्ती के फल से सभी, पाएँ सौख्य अपार॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

कल्याण मन्दिर विधान की अर्घावली

दोहा- **कल्याण मन्दिर स्तोत्र यह, पूजा करें विधान।**
भाव सहित जो भी करें, पावे जग सम्मान॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

हे कल्याण! धाम गुणगान, भव सर तारक पोत महान।
शिव मंदिर अघहारक नाम, पार्श्वनाथ के चरण प्रणाम॥1॥

ॐ ह्रीं भव समुद्र पतज्जन्तु तारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्पदोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सागर सम हैं गौरववान, सुर गुरु न कर सके बखान।
भंजन किया कमठ का मान, तब करता प्रभु मैं गुणगान॥2॥

ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तव स्वरूप प्रभु आगम अपार, मंदबुद्धि न पावे पार।
प्रखर सूर्य ज्यों आभावन, उल्लू देख सके न आन॥3॥

ॐ ह्रीं चिद्रूपाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह की भी हो जाए हान, कह पावें तव को गुणगान।
जल सागर से भी बह जाय, प्रकट रत्न भी को गिन पाय॥4॥

ॐ ह्रीं गहन गुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम गुण रत्नों के आगार, मैं मतिहीन बुद्धि अनुसार।
ज्यों बालक निज बाह पसार, उद्यत करने सागर पार॥5॥

ॐ ह्रीं परमोन्नत गुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तव गुण गाने को लाचार, योगी जन भी माने हार।
ज्यों पक्षी बोले निज बान, त्यों करते हम तव गुणगान॥6॥

ॐ ह्रीं अगम्य गुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तब महिमा जिन! अगम अपार, नाम एक जग जन आधार।
पवन पद्म सरवर से आय, ग्रीष्म तपन को पूर्ण नशाय॥7॥

ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन से ध्यायें जिन अर्हन्त, कर्म बन्ध हों शिथिल तुरन्त।
बोले ज्यों चन्दन तरु मोर, नाग डरे भागे चहुँ ओर।।8।।

ॐ ह्रीं कर्मबन्ध विनाशक क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

दोहा- **अष्टम वसुधा प्राप्त हो, हमको हे भगवान!।**
अष्ट द्रव्य के अर्घ्य से, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं हृदय स्थिताय अष्ट दल कमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन दर्शन यों विपद नशाय, सूर्योदय से तम नश जाय।
निशि में पशु ज्यों घेरें चोर, देख ग्वाल को भागे छोड़।।9।।

ॐ ह्रीं दुष्टोपसर्ग विनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भविजन तारक आप जिनेश, भवि जीवों के लिए विशेष।
मसक कराए सिन्धू पार, त्यों जन करते जिन उद्धार।।10।।

ॐ ह्रीं सुध्येयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काम से ज्यों हारे सब देव, विजय आप कीन्हे जिनदेव।
जल अग्नी का कर दे नाश, बड़वानल फिर करें विनाश।।11।।

ॐ ह्रीं अनंगमथनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणानन्त हैं को गिन पाय, तुलना किसी से ना हो पाय।
प्रभु की महिमा अगम अपार, हृदय धरे पाए भव पार।।12।।

ॐ ह्रीं अतिशय गुरवे क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम किए प्रभु क्रोध विनाश, कर्म किए फिर कैसे? नाश।
बर्फ वृक्ष को ज्यों झुलसाय, शत्रु क्षमा से जीता जाय।।13।।

ॐ ह्रीं जिन क्रोधाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ महर्षी महिमा गाय, हृदय में अन्वेषण कर ध्याय।
बीज कर्णिका में उपजाय, हृदय में निज आतम को ध्याय।।14।।

ॐ ह्रीं महन्मृग्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्यों अग्नी में जल पाषाण, स्वर्ण रूपता पाय महान।
त्यों प्रभु का करके भवि ध्यान, पाए वीतराग विज्ञान।।15।।

ॐ ह्रीं कर्मकिट्ट दहनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिठा देह में प्रभु को ध्याय, फिर तन को क्यों नाश कराय।
विग्रह जीव का रहा स्वभाव, सत्पुरुषों का है यह भाव।।16।।

ॐ ह्रीं देह देहि कलह निवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो अभेद प्रभू का कर ध्यान, योगी होवे प्रभु समान।
अमृत मान नीर का पान, कर क्यों होय ना रोग निदान।।17।।

ॐ ह्रीं संसार विष सुधोपमाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माने हरिहर ब्रह्मा रूप, अज्ञानी जिन का स्वरूप।
हुआ पीलिया रोग समान, शंख पीत दीखे यह मान।।18।।

ॐ ह्रीं सर्व जन वन्द्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय देशना प्रभु के पास, तरु अशोक का शोक विनाश।
प्रातः होते ही तरु बोध, निद्रा तज ज्यों पाए विबोध।।19।।

ॐ ह्रीं अशोक वृक्ष विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प वृष्टि करते हैं देव, ऊर्ध्व पाँखुरी रहे सदैव।
डण्ठल कहें रहें ये प्रभु के पास, आते हो कर्मों का नाश।।20।।

ॐ ह्रीं सुर पुष्प वृष्टि शोभिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि प्रभु की गम्भीर, सुधा समान हरे भव पीर।
आकुलता का करे विनाश, अक्षय सौख्य दिलाए खास।।21।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि विराजिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौसठ चँवर झुकें देव, विनय शील हो झुके सदैव।
विनयशील जो करें प्रणाम, प्राप्त करें वो मुक्ति धाम।।22।।

ॐ ह्रीं सुर चामर विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहासन पर श्री जिनेश, दिव्य ध्वनि प्रगटाएँ विशेष।
जयों मेरू पे मेघ समान, हर्षित मोर करे गुणगान॥23॥

ॐ ह्रीं पीठत्रय नायकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भामण्डल है आभावान, प्रभा दिखाए श्रेष्ठ महान।
भव्य जीव जो जिन के पास, आके पाए मोक्ष निवास॥24॥

ॐ ह्रीं भामण्डल मण्डिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

दोहा- **सोलह कारण भावना, भा बनने तीर्थेश।**
वह पद पाने हम यहाँ, देते अर्घ्य विशेष॥

ॐ ह्रीं हृदय स्थिताय षोडशदलकमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों से हो दुन्दुभि नाद, मानो कहे तजो उन्माद।
मुक्ती की मन में जो चाह, जिन पद करो विशद अवगाह॥25॥

ॐ ह्रीं देव दुन्दुभिनादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन पति के सिर हैं तीन, छत्र कहे हे ज्ञान प्रवीण।
तीन रूप ज्यों चाँद दिखाय, खुश हो प्रभु सेवा की आय॥26॥

ॐ ह्रीं छत्र त्रय सहिता क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण रजत माणिक के (कोट) साल, प्रभु का वैभव रहा विशाल।
तेज कांतिमय प्रभु यशवान, समवशरण शुभ रहा महान॥27॥

ॐ ह्रीं शालत्रयाधिपतये क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रों के मुकुटों की माल, जिन पद झुकते गिरे विशाल।
मानो जिन पद में जो आय, चरण छोड़ फिर कहीं ना जाय॥28॥

ॐ ह्रीं भक्त जनान वनपतिराय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गहन जलाशय को भी पाय, घड़ा अधोमुख पार कराय।
संत विमुख भव सिन्धु से जान, भव तारक हैं पोत महान॥29॥

ॐ ह्रीं निजपृष्ठलग्नभय, तारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन पति निर्धन कहलाय, अक्षर कोई लिख ना पाय।
हैं त्रिकाल ज्ञाता अज्ञान, ज्ञाता सर्व चराचर जान॥30॥

ॐ ह्रीं विस्मयनीय मूतर्ये क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमठ गगन से धूल गिराय, प्रभु तन को जो छू ना पाय।
तिरस्कार की दृष्टिवान, कर्म बन्ध जो किया महान॥31॥

ॐ ह्रीं कमठोत्थापित धूल्यपद्रव जिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेघ गरज बिजली चमकाय, जल वृष्टि जो भीम कराय।
प्रभु का कुछ भी ना कर पाय, निज पद में जो खड्ग गिराय॥32॥

ॐ ह्रीं कमठकृत जलधारोपसर्ग निवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर मुण्डन की धारी माल, बदन से निकले अग्नी ज्वाल।
प्रेतादिक तप करने भंग, भेज कर्म का पाया बंध॥33॥

ॐ ह्रीं कमठकृत पैशाचिकोपद्रवजिन शीलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर्षभाव से जिन पद जाय, माया तज त्रय काल में आय।
विधिवत अर्चा करे कराय, भव-भव के वह कर्म नशाय॥34॥

ॐ ह्रीं धार्मिकवन्दिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव के दुख सहे विशेष, नाम सुना ना कभी जिनेश!।
मंत्र बोल सुनता जो नाम, विपद नाश हो पाए ध्रुव धाम॥35॥

ॐ ह्रीं पवित्र नामघयेसाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा वांछित फल दातार, की ना आए प्रभु के द्वार।
सहा हृदय भेदी अपमान, शरण आय पाए सम्मान॥36॥

ॐ ह्रीं पूतपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहच्छादित रहे विशेष, देख सके ना तुम्हें जिनेश!।
मर्म भेदि कुवचन हे देव!, पर संगति से सहे सदैव॥37॥

ॐ ह्रीं दर्शनीयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्चा पूजा की (तव) पद आन, हृदय धरे ना किन्तु पुमान।
भाव शून्य भक्ति कर देवा, फलदायी ना रही सदैव॥38॥

ॐ ह्रीं भक्तिहीन जनबान्धताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरणागत जन दीनदयाल, पतितोद्धारक हे प्रतिपाल!।
झुका रह तव पद में शीश, दूर करो दुख दो आशीष॥39॥

ॐ ह्रीं भक्तजन वत्सलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशरण शरण जगत प्रतिपाल, गुणानन्त धर दीनदयाल।
तव पद में रह किया ना ध्यान, सहे कर्म घन घात महान॥40॥

ॐ ह्रीं सौभाग्यदायक पद कमल युगाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर वन्दित हे दया निधान!, जग तारक जगपति भगवान।
दुखियों का करते उद्धार, दुख सिन्धू से कर दो पार॥41॥

ॐ ह्रीं सर्वपदार्थ वेदिने क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किंचित पुण्य से भक्ति जिनेश!, हे प्रतिपालक पाई विशेष।
भव-भव में मेरे भगवान, भक्त बनें आदर्श महान॥42॥

ॐ ह्रीं पुण्य बहुजनसेव्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे जिन! सद्बुद्धि धन आन, दर्श करें खुश हो भगवान।
संस्तव कर सुविधि युत मान, वे पावे सुर पद निर्वाण॥43॥

ॐ ह्रीं जन्म मृत्युनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन मनरंजक हे कुमुदेश, सुर पद हेतु स्वर्ग प्रवेश।
किंचित काल भोग (नर-नाथ) भूपेश, कर्म नाश हो विशद जिनेश॥44॥

ॐ ह्रीं कुमुदचन्द्रयति सेवितपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

दोहा- **विंशति दल पूजा करें, पाने शिव सोपान।**
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य लें, करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं विंशति दल कमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप:-ॐ ह्रीं सर्व विघ्न हराय श्री पार्श्वनाथाय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- **पार्श्वनाथ के चरण में, वन्दन करूँ त्रिकाल।**
कल्याण मन्दिर स्तोत्र की, गाता हूँ जयमाल॥

(चौपाई)

लोकालोक अनन्तानन्त, कहते केवल ज्ञानी संत।
चौदह राजू लोक महान्, ऊँचा सप्त राजू पहिचान॥1॥
राजू एक मध्य विस्तार, मध्य सुमेरु अपरम्पार।
दक्षिण दिशा रही मनहार, भरत क्षेत्र है मंगलकार॥2॥
आर्य खण्ड में भारत देश, जिसमें भाई रहा विशेष।
उज्जैनी नगरी में जान, विक्रम राजा रहे महान्॥3॥
उसी नगर में भक्त प्रधान, गंगा में करने स्नान।
वृद्ध महर्षि आए एक, जिनमें गुण थे श्रेष्ठ अनेक॥4॥
योग्य भक्त की रही तलाश, देख भक्त को जागी आश।
श्रेष्ठ वदन था कान्तीमान, सुन्दर दिखता आलीशान॥5॥
धक्का उसे लगाया जोर, वाद-विवाद हुआ फिर घोर।
शिष्य बने जिसकी हो हार, शर्त रखी यह अपरम्पार॥6॥
ग्वाल बाल निकला तब एक, निर्णायक माना वह नेक।
कई श्लोक सुनाए श्रेष्ठ, आगम वर्णित रहे यथेष्ठ॥7॥
ग्वाला उससे था अनभिज्ञ, श्रेष्ठ महर्षि अनुपम विज्ञ।
वह दृष्टांत सुनाए नेक, ग्वाला मुग्ध हुआ यह देख॥8॥
भक्त ने गुरु को किया प्रणाम, कुमुद चन्द रक्खा तब नाम।
क्षपणक जिनका था उपनाम, जिन भक्ति था उनका काम॥9॥
आप गये चित्तौड़ प्रदेश, दर्श पार्श्व के हुए विशेष।
था स्तंभ वहाँ पर एक, उसमें थे संकेत अनेक॥10॥
उस कुटीर का खोला द्वार, शास्त्र मिला जिसमें मनहार।
एक पृष्ठ पढ़ने के बाद, बन्द हुआ फिर शीघ्र कपाट॥11॥
अदृश वाणी हुई विशेष, भाग्य नहीं पढ़ने का शेष।
एक बार यौगिक ने आन, चमत्कार दिखलाए महान्॥12॥
क्षपणक को वह माने हीन, बने आप थे ज्ञान प्रवीण।
चमत्कार दिखलाओ यथेष्ट, तब मानेंगे तुमको श्रेष्ठ॥13॥

स्वीकारा क्षण में आह्वान, भक्ति करने लगे महान्।
महाकालेश्वर के स्थान, किया कपिल ने यह ऐलान॥14॥
भूप ने कीन्हा यही कथन, क्षपणक शिव को करो नमन्।
कुमुदचन्द आचार्य मुनीश, देख झुकाएँ अपना शीश॥15॥
गढ़ चित्तौड़ के वही महान्, दिखने लगे पार्श्व भगवान।
देखा वही श्रेष्ठ स्तंभ, भरा हुआ लोगों का दम्भ॥16॥
'आकर्णितोऽपि' आदी यह श्रेष्ठ, गुरु ने बोला काव्य यथेष्ठ।
तेजोमय शुभ आभावान, प्रगटे पार्श्वनाथ भगवान॥17॥
लोग किए तब बारम्बार, जैनाचार्य की जय-जयकार।
जैन धर्म कीन्हा स्वीकार, लोगों ने मुनिवर के द्वार॥18॥
कल्याण मन्दिर यह स्तोत्र, मिला धर्म का अनुपम स्तोत्र।
करने हम आतम कल्याण, अर्घ्य चढ़ाते प्रभुपद आन॥19॥

(घत्तानन्द छन्द)

जय-जय जिन त्राता मुक्तीदाता, पार्श्वनाथ जिनवर वन्दन।
जय मोक्ष प्रदाता भाग्य विधाता, तव चरणों में करूँ नमन्॥20॥

ॐ ह्रीं कमठोपद्रव जिताय कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **पुष्पांजलि हम नाथ!, करते हैं इस भाव से।**
'विशद' झुकाएँ माथ, कल्याण मन्दिर स्तोत्र को॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

कल्याण मन्दिर स्तोत्र ऋद्धि मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पासं पासं फणं नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दव्वकराए नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं णमो समुद्र भय समन बुद्धीणं नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं णमो धम्मराए जयतिए नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं णमो धणबुद्धिं कराए नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पुत्तइच्छी कराए नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महाणं झाणाय नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उन्ह गदहारीए नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं णमो को पं हं सः नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं णमो णमो रपणासणाए नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वारिबाल बुद्धीए नमः।
12. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अग्गल भय वज्जणाय नमः।
13 ॐ ह्रीं अर्हं णमो इक्खवज्जणाए नमः।
14. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मोझ् सण झूस णाए नमः।
15. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तक्खरधणप वप्पियाए नमः।
16. ॐ ह्रीं अर्हं णमो णगभयपणासए नमः।
17. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुद्ध बुद्धि णासए नमः।
18. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पासे सिद्धा सुणंति नमः।
19. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खिगदे णासए नमः।
20. ॐ ह्रीं अर्हं णमो गहिल गह णासए नमः।
21. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पुप्फिंयतरूपत्ताए नमः।
22. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तरूपत्त पणासए नमः।
23 ॐ ह्रीं अर्हं णमो वज्ज य हरणाए नमः।
24. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगास गामियाए नमः।
25. ॐ ह्रीं अर्हं णमो हिंडण मलाणायाए नमः।
26. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जयदेयपासेवत्ताये नमः।
27. ॐ ह्रीं अर्हं णमो णमो खल-दुट्ठणासए नमः।
28. ॐ ह्रीं अर्हं उव दव वज्जणाए नमः।
29. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उव दव वज्जणाए नमः।
30. ॐ ह्रीं अर्हं णमो भद्दा ए नमः।
31. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वी आ णं पत्ताए नमः।
32. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठमट्ठदणासए नमः।
33. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जवित्ताए खित्ताए नमः।
34. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उंजि अस्सायतक्खणणं नमः।
35. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मिज्जलिज्जणासए नमः।
36. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ग्रां ह्रूं फट् विचक्राए नमः।
37. ॐ ह्रीं अर्हं णमो स्वो भि ह्री खोभिए नमः।
38. ॐ ह्रीं अर्हं इट्ठि मिट्ठ भक्खं कराए नमः।
39. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सत्ता वरिएगु णिज्जं नमः।
40. ॐ ह्रीं अर्हं णमोण्ह सौअय णासए नमः।
41. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वप्पला हव्व ए नमः।
42. ॐ ह्रीं अर्हं णमो इत्थि वत्थ णासए नमः।
43 ॐ ह्रीं अर्हं णमो बंदि मोक्ख या ए नमः।
44. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं क्लीं नमः।

प.पू. आचार्य गुरुवर श्री विशदसागरजी का चालीसा

दोहा- क्षमा हृदय है आपका, विशद सिन्धु महाराज।
दर्शन कर गुरुदेव के, बिगड़े बनते काज।।
चालीसा लिखते यहाँ, लेकर गुरु का नाम।
चरण कमल में आपके, बारम्बार प्रणाम।।

चौपाई

जय श्री 'विशद सिन्धु' गुणधारी, दीनदयाल बाल ब्रह्मचारी।
भेष दिगम्बर अनुपम धारे, जन-जन को तुम लगते प्यारे।।
नाथूराम के राजदुलारे, इंदर माँ की आँखों के तारे।
नगर कुपी में जन्म लिया है, पावन नाम रमेश दिया है।।
कितना सुन्दर रूप तुम्हारा, जिसने भी इक बार निहारा।
बरवश वह फिर से आता है, दर्शन करके सुख पाता है।।
मन्द मधुर मुस्कान तुम्हारी, हरे भक्त की पीड़ा सारी।
वाणी में है जादू इतना, अमृत में आनन्द न उतना।।
मर्म धर्म का तुमने पाया, पूर्व पुण्य का उदय ये आया।
निश्छल नेह भाव शुभ पाया, जन-जन को दे शीतल छाया।।
सत्य अहिंसादि व्रत पाले, सकल चराचर के रखवाले।
जिला छतरपुर शिक्षा पाई, घर-घर दीप जले सुखदाई।।
गिरि सम्मेदशिखर मनहारी, पार्श्वनाथ जी अतिशयकारी।
गुरु विमलसागर जी द्वारा, देशव्रतों को तुमने धारा।।
गुरु विरागसागर को पाया, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाया।
है वात्सल्य के गुरु रत्नाकर, क्षमा आदि धर्मों के सागर।।
अन्तर में शुभ उठी तरंगे, सद् संयम की बढ़ी उमंगें।
सन् तिरान्वे श्रेयांसगिरि आये, दीक्षा के फिर भाव बनाए।।
दीक्षा का गुरु आग्रह कीन्हें, श्रीफल चरणों में रख दीन्हें।
अवसर श्रेयांसगिरि में आया, ऐलक का पद तुमने पाया।।
अगहन शुक्ल पंचमी जानो, पचास बीस सौ सम्वत् मानो।
सन् उन्नीस सौ छियानवे जानो, आठ फरवरी को पहिचानो।।

विरागसागर गुरु अंतरज्ञानी, अन्तर्मन की इच्छा जानी।
दीक्षा देकर किया दिगम्बर, द्रोणगिरी का झूमा अम्बर।।
जयकारों से नगर गुँजाया, जब तुमने मुनि का पद पाया।
कीर्ति आपकी जग में भारी, जन-जन के तुम हो हितकारी।।
परपीड़ा को सह न पाते, जन-जन के गुरु कष्ट मिटाते।
बच्चे बूढ़े अरु नर-नारी, गुण गाती है दुनियाँ सारी।।
भक्त जनों को गले लगाते, हिल-मिलकर रहना सिखलाते।
कई विधान तुमने रच डाले, भक्तजनों के किए हवाले।।
मोक्ष मार्ग की राह दिखाते, पूजन भक्ती भी करवाते।
स्वयं सरस्वती हृदय विराजी, पाकर तुम जैसा वैरागी।।
जो भी पास आपके आता, गुरु भक्ती से वो भर जाता।
'भरत सागर' आशीष जो दीन्हें, पद आचार्य प्रतिष्ठा कीन्हें।।
तेरह फरवरी का दिन आया, बसंत पंचमी शुभ दिन पाया।
जहाँ-जहाँ गुरुवर जाते हैं, धरम के मेले लग जाते हैं।।
प्रवचन में झंकार तुम्हारी, वाणी में हुँकार तुम्हारी।
जैन-अजैन सभी आते हैं, सच्ची राहें पा जाते हैं।।
एक बार जो दर्शन करता, मन उसका फिर कभी न भरता।
दर्शन करके भाग्य बदलते, अंतरमन के मैल हैं धुलते।।
लेखन चिंतन की वो शैली, धो दे मन की चादर मैली।
सदा गूँजते जय-जयकारे, निर्बल के बस तुम्ही सहारे।।
भक्ती से हम शीा झुकाते, 'विशद गुरु' तुमरे गुण गाते।
चरणों की रज माथ लगावें, करें 'आरती' महिमा गावें।।

दोहा- 'विशद सिन्धु' आचार्य का, करें सदा हम ध्यान।
माया मोह विनाशकर, हरें पूर्ण अज्ञान।।
सूर्योदय में नित्य जो, पाठ करें चालीस।
सुख-शांति सौभाग्य का, पावे शुभ आशीष।।

-ब्र. आरती दीदी

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:—माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय।।